आविष्कार

◆

हिंदी विभाग

गद्य गौरव

◆

विभागीय संपादक

प्रा. डावरे रोहिणी

हिंदी विभाग

अनुक्रमणिका

गद्य गौरव

०१.	भ्रष्टाचार : एक राष्ट्रीय अभिशाप	- कु. गडाख राधिका	एम.ए. (हिंदी)	- ८४
०२.	महँगाई	- कु. वाडेकर सीमा	एफ.वाय.बी.ए.	- ८६
०३.	कवि तुलसीदास का रामचरित मानस	- कु. सातपुते हर्षला	एम.ए. (हिंदी)	- ८८
०४.	कबीर के काव्य की प्रासंगिकता	- कु. नाईकवाडी योगिता	एम.ए. (हिंदी)	- ९०
०५.	इंसान (गद्यकाव्य)	- कु. डोंगरे निता	एफ.वाय.बी.ए.	- ९४
०६.	विश्वभाषाओं से हिंदी में अनूदित साहित्य : दशा एवं दिशा	- कु. घोडके ललिता	एम.ए. (हिंदी)	- ९५
०७.	समय का महत्त्व	- कु. डावरे सुरेखा	एम.ए. (हिंदी)	- १००
०८.	चलो फिर से गुलाम हो जाए ?	- कु. सुर्यवंशी सुनिता	टी.वाय.बी.ए.	- १०२
०९.	कबीर की दार्शनिकता	- कु. साबळे संगिता	एम.ए. (हिंदी)	- १०४
१०.	खतरे में दुनिया । ९० साल बाद क्या होगा ?	- कु. सातपुते हर्षला	एम.ए. (हिंदी)	- १०७
११.	सभी रोगों के लिए रामबाण है तुलसी ।	- कु. भालेराव जयश्री	एम.ए. (हिंदी)	- १०८
१२.	गुरु की श्रेष्ठता ही शिष्य की श्रेष्ठता है ।	- प्रा. डावरे रोहिणी	हिंदी विभाग	- १०९
१३.	खोज	- कु. नाईकवाडी सुजाता	एस.वाय.बी.एस्सी.	- ११३
१४.	स्वातंत्र्योत्तर कहानी में चित्रित पिता-पुत्र का संबंध	- डॉ. शेख अकीला	हिंदी विभाग	- ११४
१५.	क्या आप जानते हैं ?	- कु. फोडसे सविता	एस.वाय.बी.एस्सी	- ११९

काव्य कलश

०१.	कौन अपना कौन पराया	- कु. वाळुंज रोहिणी	एफ.वाय.बी.कॉम.	- १२१
०२.	तो फिर क्यों रोते हो ?	- भांगरे अशोक	एफ.वाय.बी.ए.	- १२१
०३.	किताबें	- कु. वाळके स्मिता	एफ.वाय.बी.ए.	- १२२
०४.	अज्ञानी	- कु. शेख मसीरा	११ वी (कॉमर्स)	- १२२
०५.	''दिल''... एक प्यारा-सा दिल ।	- कु. भांगरे सविता	एफ.वाय.बी.ए.	- १२३
०६.	दोस्ती	- कु. पापळ दिपाली	एफ.वाय.बी.कॉम.	- १२३
०७.	प्यार की एक कहानी	- कु. वाकचौरे प्रियंका	एफ.वाय.बी.कॉम.	- १२३
०८.	जीवन	- डोंगरे राहूल	एफ.वाय.बी.एस्सी.	- १२४
०९.	बेवफा	- कु. देशमुख श्वेताली	एफ.वाय.बी.कॉम.	- १२४
१०.	कौन है पृथ्वी पर श्रेष्ठ	- कु. शेळके सुरेखा	एफ.वाय.बी.ए.	- १२४
११.	फूलों में काँटों का बडा ही महत्व है ।	- कु. भांगरे प्राजक्ता	एफ.वाय.बी.ए.	- १२५
१२.	सच्ची बातें	- कु. देशमुख मयुरी	११ वी (कॉमर्स)	- १२५
१३.	वह कौन है ?	- कु. डावरे पल्लवी	११ वी (सायन्स)	- १२५
१४.	अनमोल निधि	- मेंगाळ संदिप	टी.वाय.बी.ए.	- १२६
१५.	दौड	- कु. नाईकवाडी उज्वला	टी.वाय.बी.ए.	- १२७
१६.	जिंदगी	- कु. देशमुख मयुरी	११ वी (कॉमर्स)	- १२७
१७.	उडान	- कु. जाधव ऐश्वर्या	११ वी (सायन्स)	- १२८
१८.	डेवलपमेंट	- कोटकर श्रीकांत	१२ वी (सायन्स)	- १२८
१९.	रिश्ते	- कु. शेटे शोभा	टी.वाय.बी.ए.	- १२८
२०.	मुहब्बत	- चौधरी योगेश	एस.वाय.बी.ए.	- १२९
२१.	प्यार	- चौधरी योगेश	एस.वाय.बी.ए.	- १२९
२२.	कश्मीर	- कु. शेटे शोभा	टी.वाय.बी.ए.	- १३०
२३.	दोस्ती	- कु. धुमाळ सुरेखा	टी.वाय.बी.कॉम.	- १३०
२४.	मिलावट !	- नवले मंगेश	एस.वाय.बी.ए.	- १३०
२५.	१४ सितंबर - हिन्दी दिन - स्वागतगीत	- प्रा. डावरे रोहिणी	हिंदी विभाग	- १३१
२६.	हरिवंशराय बच्चन जी की कुछ रुबाइयाँ	- पथवे लक्ष्मण	टी.वाय.बी.ए.	- १३२

वैचारिक

भ्रष्टाचार : एक राष्ट्रीय अभिशाप

भ्रष्टाचार दूर करने के काम में हमें लाखों अच्छे लोगों का सहयोग प्राप्त करना होगा । पर ऐसा सहयोग प्राप्त करे कौन?

कु. गडाख राधिका
एम.ए. (हिंदी)

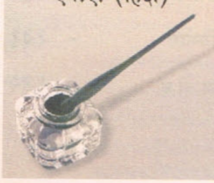

भ्रष्टाचार का अर्थ है- 'दूषित आचरण या बेईमानी !' आज यह बेईमानी या भ्रष्टाचार सर्वत्र व्याप्त दिखाई देता है । जीवन के हर क्षेत्र में भ्रष्टाचार की काली छाया फैली हुई है । आज भ्रष्टाचार को देखकर कोई नाक- भौं नहीं सिकुडता । सभी ने इसे वर्तमान जीवन के अनिवार्य अंग के रुप में स्वीकार कर लिया है । पर आज भी ऐसे अनुशासन प्रिय व्यक्ति मौजूद हैं जो भ्रष्टाचार से कोसों दूर रहते हैं किंतु, वे भ्रष्टाचारियों का विरोध करने का साहस नहीं करते और यदि उनमें से कोई इस प्रकार का साहस करता है, तो उसे मुँहकी खानी पडती है ।

'अनैतिकता' यह भ्रष्टाचार का ही उदाहरण है । समाज में अनैतिकता बहुत फैली हुई है । इसका कारण दूरदर्शन भी है । दूरदर्शन पर दिखायी जानेवाली सिरियल्स भी समाज में अनैतिकता फैलाती है ।

'अंधश्रध्दा' यह भी भ्रष्ट आचरण का ही एक भाग है । सुशिक्षित लोग भी अंधश्रध्दा के जाल में फँस जाते हैं जैसे मुंबई में एक बंगाली बाबू ने डॉक्टर, प्रोफेसर आदि जैसे शिक्षितों को भी अपने मोहजाल में फँसाया था । अंधश्रध्दा के कारण ही कोई माँ अपनी संतान की भी बलि दे देती है ।

हम भ्रष्टाचार को दो रूपों में देखते हैं। प्रथम अनुचित रूप से आर्थिक लाभ प्राप्त करना, जिसमें प्रत्यक्ष रुप से नकद व भेंट रुप में रिश्वत लेना व देना आता है । इसी कारण भारत का धन विदेशी बैंकों में जमा हो रहा है । भ्रष्टाचार का दूसरा रूप वह है जिसमें व्यक्तियों व संस्थाओं के हितों को भुलाकर व हानि पहुँचाकर स्वयं या अपने संबंधियों व संस्थाओं को अवसर, सहायता व स्थान दिलवाना सम्मिलित है। इसका भयावह रुप आज सर्वत्र देखा जा सकता है । इसी भ्रष्टाचार के कारण अमीर और गरीब के बीच खायी बढती जा रही है । गरीब को खाने के लिए रोटी और सोने के लिए जगह नहीं है तो अमीर लोग आज रहने के लिए जगह होते हुए भी 'आदर्श' भ्रष्टाचार करते हैं!

आज भ्रष्टाचार हमारे देश के लिए घोर अभिशाप बन गया है। अमीर-गरीब, शिक्षित-अशिक्षित, राजनेता-बुद्धिजीवी सभी ने भ्रष्टाचार को अपने जीवन का अभिन्न अंग मान लिया है । राशन कार्ड बनवाने, यात्रा के लिए आरक्षण करवाने जैसी छोटी-छोटी सुविधाएँ प्राप्त करने के लिए भी लोग भ्रष्टाचार का सहारा लेने लगे हैं । वे राष्ट्रीय कर्तव्य से विमुख हो गए हैं । रातोंरात अमीर बनने के लिए तस्करी करने में भी उन्हें संकोच नहीं हो रहा है । पैसा बटोरने के लिए नशीले पदार्थों का व्यापार धडल्ले से चल रहा है । लोगों ने देशभक्ति तथा कर्तव्यनिष्ठा को तिलांजलि दे दी है । वे अपनी सामाजिक जिम्मेदारी भुला बैठे हैं । भ्रष्टाचारी व्यक्तियों को समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त हो रही है । देश के कर्णधार होने का दंभ भरनेवाले नेतागण भ्रष्टाचार की दलदल में धँसे हुए हैं । कानून और व्यवस्था के रक्षक भ्रष्टाचारारियों के हाथ के खिलौने बने हुए है । देश का किशोर और युवावर्ग भ्रष्टाचारी व्यक्तियों को आदर्श मानकर उनका अनुकरण कर रहा है । युवकों के मन से राष्ट्रप्रेम लुप्त हो रहा है, और वे भ्रष्टाचार को ही जीवन का मूलमंत्र मान बैठे हैं । भूतपूर्व केंद्रिय गृहमन्त्री श्री गुलजारीलाल नन्दाजी के विचार में ''भ्रष्टाचार एक बडा नासूर है'' । अतः इस पर हमें चारों ओर से हमला बोलना होगा । भ्रष्टाचार दूर करने के काम में हमें लाखों अच्छे लोगों का सहयोग प्राप्त करना होगा । पर ऐसा सहयोग प्राप्त करे कौन? आज भारत भ्रष्ट से त्रस्त है ।

■ ■ ■

जो भी मोटी थी तिजोरी, और मोटी हो गई,
जो भी थी छोटी कुटी, वह और भी छोटी हो गई,
बाँटने वाले ! तराजू कौन ली है हाथ में
पाई तो पैसा बनी, धोती लँगोटी हो गई ।।

वैचारिक

महँगाई

> महँगाई ! महँगाई !! महँगाई !!!
> कुछ ना मिले सस्ता, महँगाई मार गयी
> हर किसी की जबाँ पर, यही बात आ गयी ।
> महँगाई मार गयी,
> महँगाई मार गयी ।।

कु. वाडेकर सीमा
एफ.वाय.बी.ए.

आज हमारा देश दिनों-दिन बढती महँगाई से परेशान है । महँगाई के कारण निम्न तथा मध्यम वर्ग के लोगों की दुर्दशा हो रही है । आज महँगाई के कारण लोगों की अनिवार्य आवश्यकताएँ भी पूरी नहीं हो पा रही है । लोग अपनी आवश्यकताएँ पूरी करने के लिए अनुचित काम करने को मजबूर हो गए हैं । परिणामतः सच्चाई, इमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा आदि नैतिक मूल्यों का तेजी से ऱ्हास होता जा रहा है । भ्रष्टाचार का राक्षस सारे देश को निगल जाने के लिए मुँह फैलाए खडा है । रोटी कपडा और मकान की समस्या बिकट से बिकटतर रुप धारण कर रही है । महँगाई का रेखालेख उपर ही चढता जा रहा है । इसका क्या कारण है ?

इसका एक कारण है देश की बढती हुई जनसंख्या । हमारे देश में जनसंख्या का विस्फोट हो रहा है । हमारे देश की जनसंख्या में प्रतिवर्ष ऑस्ट्रेलिया की जनसंख्या के बराबर नवजात शिशुओं की संख्या और जुड जाती है । जनसंख्या में यह भयानक वृद्धि, महँगाई रोकने की हमारी सारी योजनाओं पर पानी फेर देती है । यदि महँगाई के भस्मासूर को नष्ट करना है तो देश की जनसंख्या की वृध्दि को नियंत्रित करना होगा ।

महँगाई बढने के अन्य कारण है- हमारी सरकार की अव्यावहारिक- नीतियाँ, सरकारी दफ्तरों की लालफिताशाही तथा बेईमानी, व्यापारियों और जमाखोरों की स्वार्थपरता । सरकारी कर्मचारियों के भरण-पोषण पर असीमित खर्च किया जाता है । व्यापारी और जमाखोर अपने लाभ के लिए आवश्यक वस्तूओं की कमी पैदा कर देते हैं। इन कारणों से महँगाई की समस्या और जटिल बन जाती है । जैसे प्याज की कमी । चीनी की कमी आदि।

जब किसी देश की जनसंख्या बहुत तेजी से बढती है तब उस देश के प्राकृतिक संसाधनों में उसी अनुपात में वृध्दि नहीं होती । फिर हर जगह भीड ही भीड दिखाई देने लगती है और यही कारण है महँगाई बढती जा रही है ।

महँगाई के कारण गरीबों को अपनी मनपसंद चीजें खरीदने में परेशानियाँ होती हैं । निम्न तथा मध्यवर्गीय लोगों की तो यही दशा दिखाई देती है । बढती महँगाई के कारण एक वक्त की रोटी भी नसीब नहीं होती । मध्यमवर्गीय लोग बढती महँगाई के कारण अपने बचों को उच्च शिक्षा नहीं दे पाते । महँगाई बढती जा रही है उसके साथ बेरोजगारी भी बढ रही है । इसके कारण सब लोग अपनी आवश्यकताएँ पूरी नहीं कर पाते हैं । आज सारा विश्व रुपये की उपासना में तल्लीन है और जरुरतें भी बढती जा रही हैं ।

हमारे देश में जनसंख्या की वृध्दि जिस गति से हो रही है, उसी गति से प्राकृतिक संसाधन नहीं बढ रहे हैं । परिणाम स्वरुप, उपलब्ध प्राकृतिक संसाधन देश की बढती जनसंख्या की माँगों की पूर्ति करने में असमर्थ है । हमारा देश आज जनसंख्या विस्फोट के दौर से गुजर रहा है । जिसके परिणाम स्वरुप महँगाई लगातर बढ रही है।

विद्यार्थियों की शिक्षा भी महँगी होती जा रही है । विद्यालयों में प्रवेश मिलना बहुत कठिन हो गया है । महँगाई के कारण बहुत से बच्चे अपनी शिक्षा बीच में ही छोड देते हैं । चिकित्सा भी महँगी होती जा रही है । गरीब इलाज के बिना ही मर जाता है।

यदि महँगाई के भस्मासूर को नष्ट करना है, तो देश की जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित करना होगा । सरकारी नीतियों में व्यावहारिकता लानी होगी । सरकारी दफ्तरों में व्याप्त भ्रष्टाचार मिटाना होगा । बेईमान व्यापारियों तथा जमाखोरों को उचित दंड देकर उन्हें अनुशासित करना होगा । समाज में नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा करनी होगी जब तक इन उपायों व्दारा महँगाई रूपी राक्षस को वश में नहीं किया जाता तब तक आसमान छूती महँगाई से परेशान जनता हाहाःकार करती रहेगी....

''मार डाला इस महँगाई ने....!''

■ ■ ■

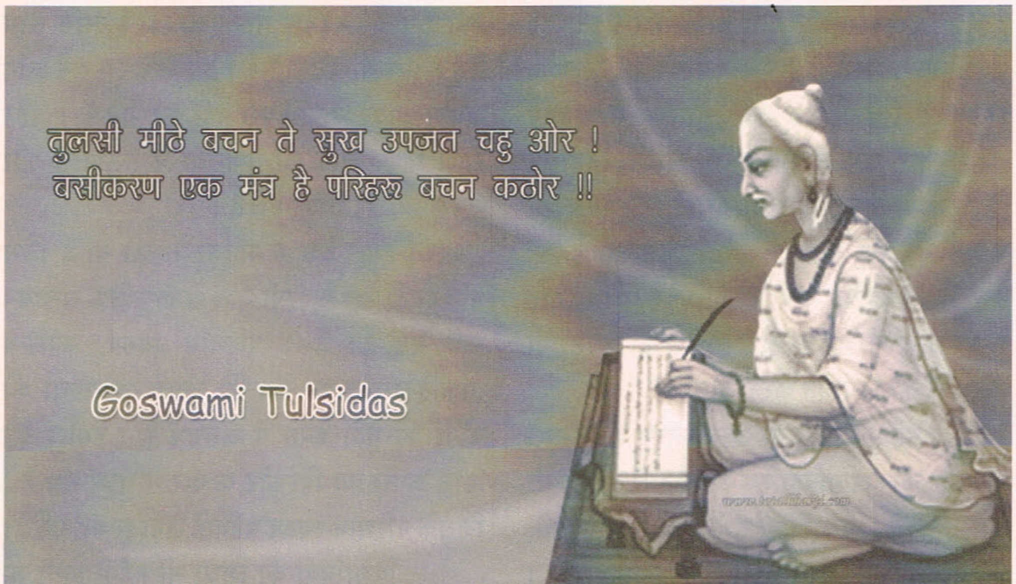

वैचारिक

कवि तुलसीदास का रामचरित मानस

रामचरित मानस जीवन का महाकाव्य है । इसके व्दारा तुलसी ने आध्यात्मिक और बौध्दिक समस्याओं को सुलझाने का प्रयत्न किया है ।

कु. सातपुते हर्षला
एम.ए. (हिंदी)

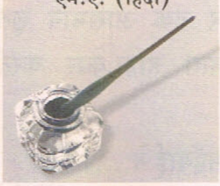

रामचरित मानस कवि तुलसीदास की कीर्ति का आधारस्तंभ और हिंदी साहित्य का सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य है । भाव और कला दोनों दृष्टियों से यह एक उत्कृष्ट एवं अमरकाव्य है । यह एक युग में रचा गया किंतु यह अनेक युगों तक की रचना बन गयी है । यह महाकाव्य तुलसी को अमर बनाने में समर्थ हुआ है । भारतीय जनमानस को छूने की इसमें अद्‌भुत शक्ति है ।

तुलसीदास ने इसमें भक्ति भावना से प्रेरित होकर आदर्श गुरु, आदर्श माता-पिता, भाई, पत्नी, पुत्र, राजा एवं प्रजा आदर्श समाज का समग्र चित्र उपस्थित किया है । यह रचना कवि तुलसीदास ने वि.सं.

१६३१ चैत्र शुक्ल ९ मंगलवार को प्रारंभ की थी । यह सात भागों में विभक्त है । कथा का विस्तार इतना है कि महाकाव्य के आठ सर्गों से भी अधिक है । विभिन्न मात्रिक और वर्णिक छंदों का यथास्थान प्रयोग किया गया है । तुलसी ने रामचरित मानस मुख्यतः दोहा और चौपाई छंदों में लिखा है ।

रामचरित मानस की रचना में यद्‌यपि तुलसीदास ने समस्त उपलब्ध ग्रंथों के भाव रखे हैं, तथापि प्रमुख आधारभूत ग्रंथ रामायण, आध्यात्म रामायण, प्रसन्न राघव नाटक, हनुमान नाटक, भागवत पुराण और गीता है । रामचरित मानस में राम का उत्कृष्ट चरित्र वर्णित है । इस ग्रंथ के भरत लक्ष्मण, सीता, रावण, हनुमान आदि अलग-अलग महाकाव्यों के नायक हो सकते हैं । रामचरित मानस का प्रमुख रस 'शांत रस' है परंतु श्रृंगार, वीर, करुण, हास्य, भयानक, रौद्र आदि रसों का भी परिपाक अनेक स्थलों पर देखने को मिलता है । श्रृंगार का जो मर्यादित रुप इसमें दिखाई देता है, वह इसकी लोकप्रियता का प्रमुख कारण है ।

रामचरित मानस चरित्र प्रधान ग्रंथ है । इसके पात्र काव्य के रूप में सामने नहीं आते बल्कि ऐसा जान पडता है कि जीवन में कहीं इनको देखा है । इसमें तुलसी ने पुराण ग्रंथ, नाटक और महाकाव्य इन तीनों की शैली और विशेषताओं का समन्वय कर दिया है । जीवन विषयक समस्याएँ महान घटनाएँ तथा इनके फलस्वरुप गंभीर भाव-प्रवाह, चरित्र और घटनाओं की विशद पृष्ठभूमि, प्रकृति और मानव जीवन के विविध रूप आदि इस ग्रंथ को महाकाव्य के गुणों से युक्त करते हैं ।

रामचरित मानस जीवन का महाकाव्य है । इसके व्दारा तुलसी ने आध्यात्मिक और बौध्दिक समस्याओं को सुलझाने का प्रयत्न किया है । राम, सीता, भरत, कौशल्या, लक्ष्मण, हनुमान, दशरथ आदि के त्याग, प्रेम, सेवा और कर्तव्यपूर्ण चरित्र हमारे ईर्ष्या, व्देष बैर, संघर्ष से पीडित समाज के लिए अमृतमयी नवीन जीवन देनेवाली औषधी है । तुलसी ने रामचरित मानस की रचना अपने युग की आध्यात्मिक समस्या का समाधान करने के लिए की थी । इस ग्रंथ का विभिन्न भाषाओं में अनुवाद हुआ है । भारत के प्रत्येक क्षेत्र में इस ग्रंथ का प्रचार हुआ है । इसके व्दारा भारतीय समाज के आदर्श की अब तक रक्षा हुई है । साथ ही प्रेम और त्याग व्दारा समाज का प्रबोधन हुआ है । विश्व साहित्य में इसकी समानता करनेवाला ग्रंथ दुर्लभ ही है ।

■ ■ ■

तुलसीदास

मुखिया मुख-सो चाहिए, खान-पान को एक।
पालै,पौढे सकल अंग, तुलसी सहित विवेक ।।

नीच निचाई नहिं तजै, सज्जनहू के संग ।
तुलसी चंदन-बिटप बसि, बिनु विष भे न भुजंग ।।

शेष न रसना खोलिए, बरु खोलिए तरवार ।
सुनत मधुर परिनाम हित, बोलिए बचन बिचारि ।।

तुलसी मीठे बचन ते, सुख उपजत चहुँ ओर ।
बसीकरन एक यह मंत्र है, परिहरु बचन कठोर ।।

तुलसी असमय के सखा,धीरज धरम विवेक ।
सहित साहस सत्यव्रत, राम भरोसो एक ।।

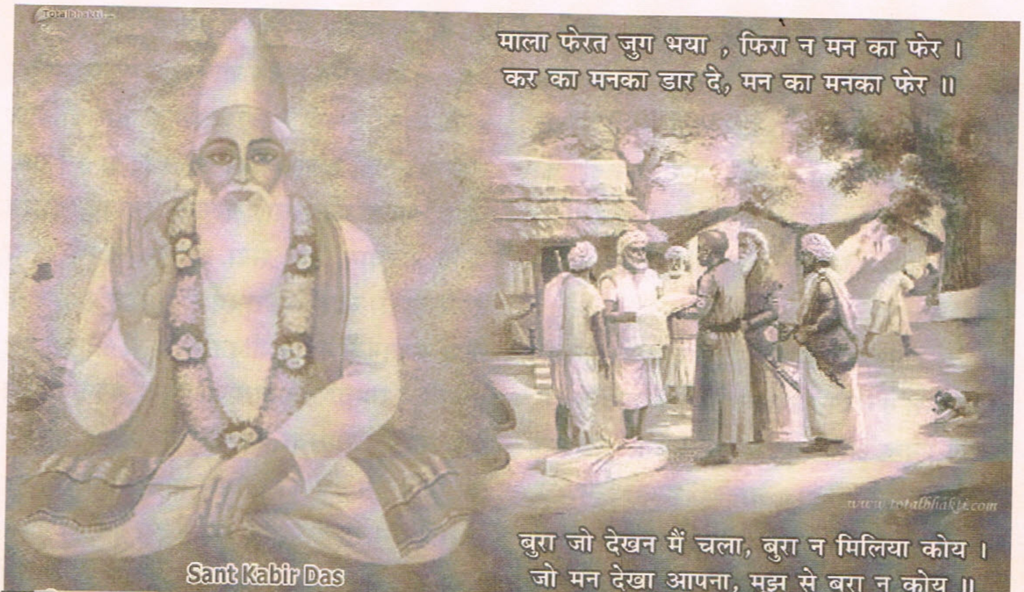

वैचारिक

कबीर के काव्य की प्रासंगिकता

कबीर ने दंभियों और ढोंगियों को फटकारते हुए उन्हें धर्म का वास्तविक स्वरूप समझाया। कबीर के काव्य का उद्देश्य धर्म के क्षेत्र में फैले बाह्याडंबर को साफ करना था ।

कु. नाईकवाडी योगिता
एम.ए. (हिंदी)

कवि सजग और संवेदनशील होता है । वह अपने अतीत और वर्तमान की विभिन्न विचार धाराओं से प्रभावित होता है । कबीर साहित्य का अध्ययन धार्मिक, दार्शनिक, अध्यात्मिक दृष्टि से हो सकता है तथा उसे एक निश्चित ऐतिहासिक, सामाजिक पृष्ठभूमि में रखकर भी परखा जा सकता है । कुछ विद्वान उन्हें रहस्यवादी, कुछ समन्वयवादी तो कुछ समाज सुधारक मानते हैं। जिस कवि ने जीवनभर सामाजिक धार्मिक चौखटों का विरोध किया उस कवि को किसी एक संप्रदाय या चौखट के भितर रखना ठिक नहीं है ।

कबीर का अविर्भाव असमंजस में डालनेवाली तथा परस्पर विरोधी विभिन्न परिस्थितियों में हुआ था । महान कवि परस्पर विरोधी परिथितियों में सही रास्ता खोजने की क्षमता रखता है । कबीर नें इस संक्रमण काल में सभी अंगों को सही दिशा दे सके ऐसे काव्य का निर्माण किया । कबीर ने कविता के लिए कविता नहीं की । उन्होंने आस-पास का जीवन देखा, जीवनानुभव को ग्रहण किया और उसमें जो जीवन सत्य उन्होंने पाया वही उनकी कविता है।

कबीर जिस युग की उपज थे वह धर्मप्रधान युग था । धर्म के क्षेत्र में विविध मत-मतांतर प्रचलित थे । वैष्णव, शैव, शाक्त, नाथपंथ, जैन,सूफि, इस्लाम आदि । सब अपने अपने राग अलापते थे । सबकी अपनी मान्यताएँ थी । हर एक अपने को एक दूसरे से श्रेष्ठ समझता था । धर्म के नाम पर अधर्म, पाखंड, दंभ, आडंबर, मात्र रह गया था । समाज में छूआछूत की भावना प्रबल थी । कबीर ने ''अपरंपार के नाडु अनंत और जाके मुख माया नहीं, नाहीं रूप अरूप'' कहकर हिन्दुओं की बहुदेवोपासना का विरोध करते हुए उसे निर्गुण एवं निराकार बताया । मुसलमानों के उस एकेश्वरवाद का विरोध किया जिसके अनुसार खुदा बंदे से पृथक सातवे आसमान पर बैठा है।

कबीर ने दंभियों और ढोंगियों को फटकारते हुए उन्हें धर्म का वास्तविक स्वरूप समझाया। कबीर के काव्य का उद्देश्य धर्म के क्षेत्र में फैले बाह्याडंबर को साफ करना था । कवि ने हिंदू-मुसलमान दोनों की दुर्बलताओं पर प्रहार किया । उन्होंने मुसलमानों के रोजा, नमाज, हज, कुरान आदि की आलोचना की तो दूसेरी ओर हिंदूओं की एकादशी, श्राद्ध, तीर्थ, व्रत, वेद, अवतार और छूआछूत का विरोध किया । ''जाँति-पाँति पूछे नहीं कोई हरि को भजे सो हरि को होई'' कहकर धर्म को किसी एक वर्ग की बपौती न मानकर कबीर ने धर्म को सार्वजनिक क्षेत्र में लाकर खडा किया है। उन्होंने धर्म के ठेकेदारों से सवाल किया कि मुसलमानों के खुदा मस्जिद में रहते हैं और हिंदुओं के मंदिर में तो जहाँ ये दोनों नहीं है वहाँ किसकी ठकुराई चलती है । कबीर नें मूर्तिपूजा का विरोध करते हुए कहा कि पत्थर पूजने से हरि मिलते हैं; तो पाहर की पूजा क्यों नहीं ?

''पाहान पूजै हरि मिलै, तो मैं पुजू पाहर ।
ताते ये चाकी भली, पीस खाय संसार ।''

मुसलमानों को उन्होंने कहा कि, रोजा रखना और गाय का वध करना दोनों एक साथ नहीं चल सकता ।

''दिन में रोजा राखत है, रात हनत है गाय ।
यह तो खून बह बंदगी, कैसी खुशी खुदाय ।।''

हिंदूओं से उन्होंने पूछा कि बालों को मूँडते हो मन को क्यों नहीं मूँडते, जिस में विषय वासनाएँ है । उनका तर्क है कि, यदि तीर्थ स्थानों में स्नान करना महत्वपूर्ण है तो उन स्थानों में रहनेवाले मेंढकों को सर्वश्रेष्ठ जीव होना चाहिए । मूँड मूँडने से बैकुंठ मिलता है तो सबसे पहले भेडों को मिलना चाहिए । मुल्ला से तो मुर्गा अच्छा है जो सोते हुए लोगों को जगाता है । कबीर ने उस ब्राम्हण और मुसलमान लोगों को फटकारते हुए कहा कि यदि तुम अपने को जन्म से श्रेष्ठ मानते हो तो तुमने दूसरे रास्ते से जन्म क्यों नहीं लिया ।

"जो तू बाँभनी का जाया, तो आन बाट क्यों नहीं आया ?

जो तू तुरक तुरकनी का जाया, तो भीतर खतना क्यों न कराया ।"

क्या तुम्हारे धमनियों में दूध बहता है और शूद्र की धमनियों में लहू ?

इस प्रकार कबीर ने जन्म से कोई ब्राम्हण,शूद्र, हिंदू, मुसलमान नहीं हो सकता इसे समझाया है। वे जाति, वंश, रंग, धर्म, संप्रदाय के आधार पर कोई श्रेष्ठता स्वीकार नहीं करते । उनके अनुसार ये सारे झगडे बेकार हैं। ये सब उपरी बातें हैं । वास्तव में परमतत्त्व तो एक है । उसका अंश सभी में है । हर कोई उसे प्राप्त कर सकता है । इस प्रकार कबीर ने धर्म का सरल एवं सहज स्वरूप लोगों के सामने रखा ।

कबीर मनुष्य को विभाजित करके देखने के पक्ष में नहीं थे । उन्होंने जिस सत्य का साक्षात्कार किया था वह खंडित सत्य नहीं था और न उसे विभिन्न टुकडों में विभाजित करके पाया जा सकता था । कबीर का सारा रहस्यवाद, एकेश्वरवाद और उनकी सारी दार्शनिक, धार्मिक मान्यताएँ उनकी एकात्ममूलक दृष्टि से उत्पन्न हैं । वे आत्मा और परमात्मा को तत्वतः एक मानते हुए अपनी रहस्य परक अभिव्यक्तियों में सारी सृष्टि को एक और आत्मवत अनुभव करते हैं । वे मन की पवित्रता को महत्व देते हैं । उनके अनुसार प्रेम ही परमेश्वर तक पहुँचने की सीढी है । यह प्रेम ही कबीर को अभेद की दृष्टि देता है । ईश्वर का प्रेम ही महासुख का साम्राज्य है । कबीर के विरह के पदों में जो बेचैनी, तडप है वह शुद्ध प्रेम की बेचैनी है । बाह्याचारों को हटाकर शुद्ध प्रेम और एकोत्ममूलक दृष्टि को आगे लाने का यह प्रयास साधन मात्र नहीं है ।

कबीर मनुष्य की सार्थकता पर जोर देते हैं । वे 'चोला' शब्द का बार-बार इस्तमाल करते हैं । उसे साधना में लगाने तथा रागहीन बनाने पर जोर देते हैं ।

कबीर एक गृहस्थ थे । अपने पेशेद्वारा जीविकोपार्जन करनेवाले थे । उन्होंने बार-बार अपने को 'काशि का जुलाहा' कहा है । वे संसार से विरक्त महात्मा नहीं थे । इसी जीवन में उन्होंने सत्य का साक्षात्कार किया था । उस सत्य का साक्षात्कार वे जनसामान्य को कराना चहाते थे । योग का लक्ष्य साक्षात्कार होता है, इस साधना से योगी में आत्मविश्वास, शक्ति, दृढता आती है । कबीर ने योग साधना को बहुत महत्व दिया है ।

कबीर की कविता प्रामाणिक अनुभवों की कविता है । उस में तेज है, शक्ति है । अनुभव और आत्म ज्ञान पर कबीर ने बहुत जोर दिया है । पुस्तक या पोथी पढकर कोई विद्वान नहीं बन सकता इस बात पर उनका पूरा विश्वास है । ज्ञान के क्षेत्र में वे गुरु का महत्व सर्वोपरि मानते हैं परंतु ज्ञान प्राप्ति के लिए गुरु और शिष्य दोनों का महत्त्व आवश्यक मानते हैं । गुरु शिष्य योग्यता को वे निम्नलिखित साखी में समझाते हैं -

"जाका गुरु भी अंधला चेला खरा निरंध ।

अंधा अंधे ठेलिया दुन्यु कूप पडंत ।।"

आचरण की शुद्धता पर कबीर ने बल दिया है । दूसरों की निंदा न करने का उपदेश देते हुए कबीर कहते हैं कि वह राम भक्ति से विमुख हो जाता है । दूसरों के दोष देखने के बजाए अपने दोष देखने के

लिए कबीर कहते हैं। कबीरने समाज को आत्मपरिक्षण करने का उपदेश दिया है ।

बूरा जो देखन मैं चाला बूरा न मिलिया कोई ।
जो दिल खोजू अपना मुझ सा बूरा न कोई ।।

कबीर ने सत्संगति में रहने का उपदेश दिया है। कुसंगति की निंदा की है । कबीर सबके कल्याण की कामना करते हुए कहते हैं कि...

''कबीरा खडा बाजार में, माँगे सबकी खैर ।
ना कछू की दोस्ती, ना कछू से बैर ।।''

कबीर की कविता जिंदगी के अधिकाधिक निकट है । इसलिए प्रखर और धारदार है । उसमें ईमानदारी और अनुभूति की प्रामाणिकता है । उनकी कविता में आत्मसजगता, जागरुकता और तार्किक विश्लेषण बहुत है । साहस, सचाई, आत्मविश्वास और दृढता के लिए तो कबीर संपूर्ण हिन्दी साहित्य में रेखांकित है । कबीर की कविता भिन्न सौंदर्याभिरुचि की कविता है । उनकी कविता बने-बनाए संस्कारों के विपरीत है । सची कविता भी शायद वही है जिसके लिए पुराने पैमाने छोटे हो जाए और कविता बडी हो जाए । कबीर की कविता इसी कोटी की हैं । कबीर की कविता में कुछ ऐसे तत्व है कि जो आज लगभग ६०० वर्षों बाद भी प्रासंगिक लगते हैं, आधुनिक लगते हैं । कबीर के धर्म के क्षेत्र में चलनेवाला ढोंग, पाखंड बाह्याडंबर, छूआछूत, जाति भेद आज के समाज में भी देखा जा सकता है, जिसे दूर करने की क्षमता कबीर के काव्य में है। कबीर ने धर्मक्षेत्र में फैली उपर्युक्त सभी बुराइयों पर ६०० वर्ष पूर्व ऊँगली उठायी थी । यह कबीर के काव्य की विशेषताएँ हैं।

कबीर के विचार क्रांतिकारी हैं । वैज्ञानिकता और आधुनिकेता का दंभ भरनेवाला समाज आज भी अंधश्रद्धाओं से जकडा हुआ दिखाई देता है ।

कबीर के अनुसार भगवान न मंदिर में हैं न मस्जिद में हैं, वह तो हमारे मन में हैं । इस सत्य को हम आज भी नहीं पहचान पाए हैं। कबीर ने तीर्थों की निःसारता इसी संदर्भ में स्पष्ट की है। परंतु आज 'शिर्डी' या 'तिरुपती' जाना एक फैशन बन गया है । आज का मनुष्य बाह्य या भौतिक दृष्टि से भले ही सुन्दर हो गया है परंतु उसकी मानसिकता आज भी कबीर के जमाने की है ।

राष्ट्रीय एकात्मता या विश्वमानव के बीच एकात्मता स्थापित करने की आवश्यकता आज हर देश, विश्व, अनुभव कर रहा है । कबीर का काव्य मानव-मानव के बीच एकता स्थापित करने का कार्य १५ वीं शति में ही कर चुका है । कबीर मानव को विभाजित करके देखने के पक्ष में नहीं थे । कबीर का सहज धर्म, मानव धर्म ही है । मानव के साथ मानव जैसा व्यवहार करने में ही कबीर का विश्वास था । कबीर ने जिस मानव धर्म की बात की है, प्रेम, दया, करुणा, भाईचारा इन मानव मूल्यों का पुरस्कार किया है, उस मानवधर्म, मानव मूल्यों की कमी को आज का समाज गहराई से अनुभव कर रहा है ।

कबीर ने ज्ञान के क्षेत्र में गुरु और शिष्य की योग्यता पर बल दिया है । पुस्तकीय ज्ञान को नकारा है । आज शिक्षा के क्षेत्र में फैले हुए भ्रष्टाचार को देखते हुए अध्यापक और विद्यार्थी को नये सिरे से सोचने की आवश्यकता महसूस हो रही है । पुस्तकीय ज्ञान को विद्यार्थी अवश्य अर्जित करें

परंतु उस ज्ञान पर गहराई से चिंतन, मनन करने की आवश्यकता है ।

किसी भी समाज के स्थायित्व के लिए हर सदस्य का शुद्धाचरण होना आवश्यक है। कबीर ने सदाचरण, सत्संगती शरीर तथा मन की शुद्धि पर बल दिया है । ''जैसा मुख से निकले वैसी चाले चाला'' कहकर कथनी और करनी में एकरुपता रखने का आग्रह किया है । आज समाज जीवन के हर क्षेत्र में दिखाई देनेवाला भ्रष्ट आचरण निश्चित रुप से समाज को शीघ्रता से पतन की ओर ले जा रहा है। ऐसे समय में कबीर की नैतिक मूल्यों का उपदेश देनेवाली साखियाँ निश्चित रुप से समाज के लिए सहायक हो सकती है ।

आज लगभग ६०० वर्षों बाद कबीर काव्य की प्रासंगिकता को हम वर्तमान की कसौटीपर कस रहे हैं। और कबीर का काव्य इस कसौटीपर खरा उतर रहा है । निश्चित रुप से कबीर ने अपने काव्य के माध्यम से जो बातें बताई वह हर काल में लागू हो सकती है । कबीर के संबंध में नगेंद्रजी का कथन सार्थक लगता है - ''भारतीय धर्म साधना के इतिहास में कबीरदास ऐसे महान विचारक एवं प्रतिभाशाली महाकवि हैं जिन्होंने शताब्दियों का उल्लंघन कर दीर्घ काल तक भारतीय जनता का पथ आलोकित किया है और सच्चे अर्थ में जन जीवन का नायकत्व किया है।''

कबीर के संबंध में नगेंद्रजी का यह कथन उनके काव्य को और भी प्रासंगिक बना देता है।

■ ■ ■

इंसान (गद्यकाव्य)

कु. डोंगरे निता एफ.वाय.बी.ए.

यूँ तो इंसान ने हर ख्वाब सजा रखा है, उन्हें पूरा करने की इच्छा को भी जगा रखा है । पर जिंदगी की किताब के हर पन्ने पर, खुशियाँ लिखी नहीं रहती ।

गम आएँगे, तूफाँ आएँगे । कभी-कभी तो अपनी ही परछाई साथ नहीं रहती । यह सब सहकर भी मनुष्य कभी नहीं है घबराया । हर मुश्किल को देखकर है वह मुस्कुराया । कब थकेगा, थमेगा वह इंसान, गिरता है, उठता है , फिर गिर के उठता है । जिंदगी की राहों पर बेफिक्र होकर है चलता जितना है, उससे ज्यादा पाने की, उम्मीद है रखता । पाकर गम भी, खुशीसे है जीता । जानता है, नहीं बदल पाएगा अपने हाथों की लकिरों को । फिर भी लडकर भाग्य से बदलता है अपनी तकदीर को । कितना विचित्र है यह इंसान । जानता है अपनी हदों को, मौत को, फिर भी जीता है सिर उठा के, मुस्कुरा के । पता नहीं कब खत्म होगा यह फासला, एक के बाद एक । अब कहिए कौन है अद्‌भुत ? यह इंसान, या फिर वह जिसने की इसकी रचना महान !

■ ■ ■

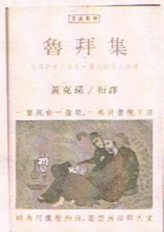

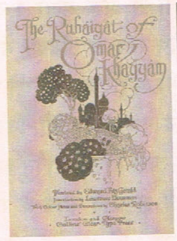

संशोधपर

विश्वभाषाओं से हिंदी में अनूदित साहित्य : दशा एवं दिशा

हिंदी में जो तब अभाव था, किया पूर्ण है कवि निष्काम
प्यार डार भावनाओं के स्वर उभरा करते उद्दाम,
यह प्रयोग था अपनेपन का ,जीवन का मनोरंजन स्त्रोत,
हिंदी में हो गई सुचर्चित, रूबाइयाते उमर खैयाम ।।

कु. घोडके ललिता
एम.ए. (हिंदी)

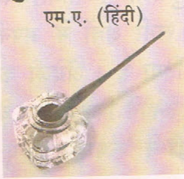

फारसी साहित्य का सर्वाधिक लोकप्रिय रचना-विधान रूबाई है। यह मूलत: फारसी का ही काव्यरूप है। इसमें भाव और भाषा,विचार और कल्पना का सुंदर तथा संतुलित समन्वय होता है। उसमें भावों की गहराई,सरसता,सौंदर्य,प्रवाह और प्रभाव होता है । फारसी के कवि उमर खैयाम की कलम का पारस स्पर्श पाकर उसका रूप इतना चमका कि आज सदियों के बाद भी उसकी दीप्ति और गौरव अक्षुण्ण बना हुआ है। अनुवादों ने उमर खैयाम को अमरत्व का सेहरा पहना दिया है और उनकी रूबाइयों का अँग्रेजी में अनुवाद करनेवाले फिट्जेराल्ड भी विश्व में अमर हो गए हैं ।

हिंदी साहित्य के आधुनिक काल के आरंभिक कवियों का ध्यान अनुवाद की ओर भी गया। श्री. कृष्णदत्त पालीवाल जी ने लिखा है, 'आधुनिक भारत के सामाजिक-सांस्कृतिक नवजागरण का एक विशिष्ट पहलू यह भी रहा है कि उसमें विचारकों,समाज-सुधारकों और राजनीतिज्ञों ने अनुवाद के महत्त्व को ठीक से पहचाना है। सर्वप्रथम आधुनिक भारतीय भाषाओं से ज्ञान-विज्ञान को एक भाषा से दूसरी भाषा

में ले जाने का कार्य तेजी से शुरू हुआ । दूसरे ,विदेशी भाषाओं में,विशेष रूप से अँग्रेजी में,जो बहुत महत्त्वपूर्ण था,उसे भी अनूदित करने की हवा चली । हिंदी में भारतेंदु ने न केवल देशी-विदेशी भाषाओं के अनुवाद की परंपरा डाली अपितु अपने समकालीन रचनाकारों को अनुवाद कार्य के लिए प्रोत्साहित भी किया । शायद ही भारतेंदु युग का कोई रचनाकार या आलोचक हो जिसने अनुवाद न किया हो और अनुवाद -कार्य में गौरव का अनुभव न किया हो । अनुवाद का महत्त्व इन्हें इस कारण भी पता है कि वे सभी भावों-विचारों के आदान-प्रदान के लिए अनुवाद को एक जरुरी सांस्कृतिक सेतु बनाते हैं। भारतेंदु-युग के अनुवादों की यह गौरवशाली परंपरा व्दिवेदी-युग में विकसित - पल्लवित होती है ।' १

इसी समय उमर खैयाम की रूबाइयों के अनुवाद की परंपरा आरंभ हुई । हिंदी में सर्वप्रथम हैदराबाद सिंध के डिप्टी कलेक्टर मिर्जा कलीम बेग ने सन् १९०४ में उमर खैयाम की १३० रूबाइयों का अनुवाद किया । पं.श्रीधर शर्मा ने सन् १९३१ में हिंदी में खैयाम की रूबाईयों का अनुवाद प्रस्तुत किया। ये अनुवाद पत्र- पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए। सर्वप्रथम पुस्तकाकार में सन् १९३१ में मैथिलीशरण गुप्त जी का अनुवाद प्रकाशित हुआ । सन् १९३१-३२ में केशवप्रसाद पाठक और पं.बलदेव प्रसाद मिश्र का अनुवाद प्रकाशित हुआ । सन् १९३३ में डॉ.गयाप्रसाद गुप्त का अनुवाद हिंदी साहित्य भण्डार,पटना से प्रकाशित हुआ । यह बंगला में हुए अनुवाद का अनुवाद था । कवि पंत भी १९२९ में असगर गेण्डवी की सहायता से खैयाम की रूबाइयों का अनुवाद कर चुके थे किंतु इसका प्रकाशन सन् १९४८ में 'मधुज्वाल' नाम से हुआ । बच्चनजी का एक अनुवाद सन् १९३५ में और दूसरा १९५९ में प्रकाशित हुआ । तो रघुवंशलाल गुप्त ने १९३८ में 'उमर खैयाम की रूबाईयाँ ' में खैयाम की ७२ रूबाइयों को फिट्जेराल्ड के अँग्रेजी अनुवाद के आधार पर अभिव्यक्ति दी।

पं.गिरिधर शर्मा नवल तथा किशोरी रमण टंडन आदि ने भी खैयाम की रूबाइयों का अनुवाद किया है। अनुवादकों की इस शृंखला में गुप्त जी का स्थान महत्त्वपुर्ण है । वे ही सर्वप्रथम उमर खैयाम को हिंदी साहित्य में लाए । उनके इस कार्य का ऐतिहासिक महत्त्व है। उनके बाद अनुवादों का एक सिलसिला शुरु हो गया । खैयाम की रूबाइयों के अनुवादों की धूम मच गयी । इकबाल वर्मा 'सेहर' ने फारसी से अनुवाद किया तो अधिकांश अनुवादकों ने खैयाम को अँग्रेजी अनुवाद के माध्यम से पहचाना । 'फारस का यह गुलाब इंग्लैण्ड के क्षेत्र में विकसित हो कर भारतवर्ष पहुँचा है । हम भी इसके रूप और गंध पर मुग्ध हैं।' २

अनुवादों की इस शृंखला में मैथिलीशरण गुप्त, केशवप्रसाद,हरिवंशयराय बच्चन और सुमित्रानंदन पंत के अनुवाद प्रमुख कडियाँ हैं । अतएव यहाँ उन्हींका विवेचन किया गया है ।

मैथिली शरण गुप्त :- गुप्तजी ने सामाजिक, साहित्यिक,धार्मिक आदि सभी क्षेत्रों में अपनी युगानुकुलता का परिचय दिया है । अँग्रेजी का अत्यल्प ज्ञान होने पर भी उन्होंने फिट्जेराल्ड के अनुवाद के आधार पर हिंदी में 'रूबाइयात -ए-

उमर खैयाम' यह अनुवाद प्रस्तुत किया । उन्होंने अपने परम मित्र रायकृष्ण दास तथा अन्य मित्रों के आग्रह से यह पद्यानुवाद किया । उन्हें अँग्रेजी अनुवाद को हिंदी में समझाया गया और उन्होंने उसे पद्यबध्द किया । इसमें खैयाम की ७७ रूबाइयों का अनुवाद किया गया है । उनका क्रम तथा मूल रूप फिट्जेराल्ड के सन् १८५८ के प्रथम संस्करण के अनुसार है । इसमें कवि ने खडीबोली की प्रवृत्ति का ध्यान रखा है । यह रूपांतर साधु और सरल है । इसमें मूल भावों का व्यक्तिकरण हुआ है,किंतु उनकी मार्मिकता अथवा तलस्पर्शिता का निर्वाह नहीं हो पाया है । भावाभिव्यक्ति की स्पष्टता और पदावली की सामान्य गठन इस अनुवाद की विशेषता है ।

अए प्रिये, यह प्याला भर दो,जमने दो तुम इसका रंग
करता है जो वर्तमान में,भूत भविष्य भावना भंग
आगामी कल की चर्चा क्यों आगामी कल तो सहसा
हो सकता हूँ मैं कल की सत्तर शताब्दियों के संग।।

रूबाइयात उमर खैयाम -रू.क्र.२० पृ.४०

इस तरू तले कहीं खाने को रोटी का टुकडा हो एक,
पीने को मधु-पात्र पूर्ण हो, करने को हो काव्य-विवेक
तिस पर इस सन्नाटे में तुम बैठे बगल में गाती हो
तो नंदन सम इसी विजन में मुझे स्वर्ग का हो अभिषेक ।

रूबाइयात उमर खैयाम ,रू.क्र.११ पृ.३५

गुप्त जी का अनुवाद अँग्रेजी से हुआ पर शैली की दृष्टि से वह फारसी से प्रभावित है । केशव प्रसाद पाठक :- केशव प्रसाद जी के अनुवाद में प्रत्येक पृष्ठ पर फिट्जेराल्ड का अनुवाद उद्धृत करते हुए उसका हिंदी रूपांतर दिया गया है । उनका 'रूबाइयात उमर खैयाम' स्वाभाविक और सुंदर अनुवाद है । इसकी भाषा भावानुकूल और अकृत्रिम है । यह सायास काव्याभिव्यक्ति नहीं है । भाषा की स्वच्छता तथा मधुरता की दृष्टि से यह एक सफल अनुवाद है ।

'पा न सका मैं ताली जिसकी,ऐसा एक वहाँ था व्दार
परदा एक पडा था जिसके नहीं सुझता था उस पार
मेरी-तेरी चर्चा होते दिख पडी केवल पल चार,
इसके बाद मिट गया सहसा,मैं तू का सारा व्यापार।।'

रूबाइयात उमर खैयाम ,रू.क्र.३२ पृ.३२

पाठक जी ने अपने अनुवाद को अधिक समृध्द और प्रांजल बनाया है । यह केवल छायानुवाद नहीं है । यह रचना अनुदित नहीं लगती यही कवि की सबसे बडी सफलता है ।

सूमित्रानंदन पंत -पंत का मधुज्वाल उमर खैयाम की १५१ रूबाइयों का पद्यानुवाद है । उन्होंने इसे 'गीतांतर' कहा है । मधुज्वाल की भूमिका में वे लिखते हैं, 'असगर साहब जिस भावुकता और तल्लीनता से मुझे फारसी रूबाइयों का भावार्थ समझाते थे और साथ ही फारसी के अन्य कवियों की मिलती-जुलती रूबाइयों को भी सुनाना नहीं भूलते थे,उससे प्रेरणा पाकर मैंने उस

प्रेम और सौंदर्य के गंधोच्छवास से घने वातारण को गीतों की प्यालियों में ढालने का प्रयत्न किया था ।--- फिट्जेराल्ड का कल्पना सौंदर्य अपना है, भाव उमर के । इसीका अनुसरण मैंने भी अपने इस चपल प्रयास में किया है। इसलिए बुलबुल के साथ कोयल के स्वर और गुलाब के साथ आम्र मंजरी की गंध भी इन स्वप्न मद भरे गीतों में सहज ही मिल गई है ।'३

इस आत्मनिवेदन के आधार पर कहा जा सकता है कि पंत ने फिट्जेराल्ड के अनुवाद का अनुसरण किया है । यह पद्यानुवाद मात्र है । भाव और भाषागत सौंदर्य का इसमें अभाव है ।

मधुबाला के साथ सुरा पी उतर विजन में कर तू वास
जग से दूर,जहाँ जीवन के तापों का न मिले आभास ।
दो दिन का साथी यह जीवन,ज्यों वन फूलों का आमोद
गुल वदनों से,मधु अधरों से कर ले कुछ क्षण हास-विलास ।।
मधुज्वाल रू.क्र.१४४-पृ.क्र.१४४

हरिवंशराय बच्चन - उमर खैयाम की रूबाईयों का अनुवाद करनेवाले कवियों में सर्वाधिक सफलता बच्चनजी को ही मिली है । क्योंकि उनके लिए जीवन की अन्य विवशताओं के समान ही अनुवाद भी जीवन की एक माँग बन गई थी । कवि के शब्दों में 'रूबाइयात के अनुवाद ने मेरे हृदय की बंद सुराही के मुँह से ढक्कन खींच लिया था और मदिरा की धार बह चली थी, मधुशाला के रूप में । खैयाम की मधुशाला में केवल खैयाम और उसकी प्रेयसी का वार्तालाप नहीं है । वह तो मानव जीवन की जन्म से लेकर मृत्यु तक की चर्चा है । ---- ।''४ बच्चन जी खैयाम से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने खैयाम की मधुशाला (सन् १९३५) तथा उमर खैयाम की रूबाइयाँ ,(सन् १९५९) ये दो अनुवाद लिख डाले ।

'खैयाम की मधुशाला में फिट्जेराल्ड के अँग्रेजी अनुवाद के अनुसार खैयाम की ७५ रूबाईयों को भावानुवाद पध्दति से सरस अभिव्यक्ति प्रदान की गई है । इसमें प्रत्येक रूबाई के साथ अँग्रेजी रूपांतर भी उद्धृत है । यह अनुवाद अधिक लोकप्रिय हुआ । इसमें कवि रूबाई की तुक-योजना नहीं निभा सका, फिर भी इसमें सौंदर्य और गेयता है । यह एक मौलिक पुन: सृजन है ।

हरी सिर पर तरूवर की डाल
हरी पाँव के नीचे घास
बगल में मधु मदिरा का पात्र
सामने रोटी के दो ग्रास
सरस कविता की पुस्तक हाथ
और सबसे ऊपर तुम प्राप्त
गा, रही छेड सुरीली तान
मुझे अब मरू नंदन उद्दयान ।।

बच्चन जी ने रूबाइयों का अनुवाद फिट्जेराल्ड के अनुवाद से किया था । उन्होंने लिखा है- 'उच्च कोटि की कविता केवल निष्क्रिय नहीं होती,वह सक्रिय भी होती है । अर्थात् कविता सुंदर तो होती ही है साथ ही सुंदरता को देखने के लिए आँखे भी देती है । -- अब आप रूबाइयों को गुणगुनाने लगते हैं '।५

पिलाकर प्यारी मदिरा आज,
नशे में इतना कर दो चूर
भविष्यत् के भय जाएँ भाग
भूत के दारूण दुख हो दूर ।
प्रिये लेना मत कल का नाम,
नहीं कल पर मुझको विश्वास,
अरे,कल दूर,एक क्षण बाद,
काल का मैं हो सकता ग्रास ।।

उमर खैयाम की रूबाईयाँ रू क्र.२० पृ.२०

बच्चन जी के अनुवाद अत्यंत सहज, सुंदर, संगीतमय हैं । रूबाई का प्रभाव, सौदंर्य आदि सब कुछ उसमें विदयमान है ।बच्चन जी सफल अनुवादक है । उनके कायस्थ संस्कारों ने अनुवादों को बहुत ही सुंदर बनाया हैं। ये इतने प्रभावी बने हैं की पाठक मूल को भूल गए और अनुवाद को मौलिक सृजन मान बैठे । बच्चनजी से पूर्व के अनुवादों में तत्सम शब्दों की प्रधानता है,तो बच्चन जी के अनुवादों में तद्भव शब्द अपनी पूरी शक्ति के साथ प्रकट हुए हैं।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि गुप्त जी के अनुवाद में प्रासादिकता है,तो पाठक जी के अनुवाद में माधुर्य । पंत जी के अनुवाद में भारतीय कल्पना है तो बच्चन जी के अनुवाद में मादकता और नशा ।

खैयाम के काव्यानुवादों का हिंदी काव्य में महत्वपूर्ण स्थान है । हिंदी साहित्य के विकास में उनका योगदान उल्लेखनीय है ।उसने हिंदी काव्य को नयी दशा और दिशा दी है । अनुवादों ने उमर खैयाम को हिंदी जगत् के सामने प्रस्तुत किया। परिचय आकर्षण में बदला और हालावादी काव्य का सृजन हुआ । हिंदी में अनेक मौलिक रूबाइयाँ लिखी गई । हिंदी काव्य इनसे समृध्द हुआ । अनुवाद नींव के पत्थर बने । उसपर मौलिक रूबाइयों,मुक्तकों तथा चतुष्पदी का भव्य भवन खडा हुआ । मैथिलीशरण जी के 'रूबाइयाते उमर खैयाम' कार्य पर ताराचंद पाल बेकल जी ने एक सुंदर रूबाई लिखी है, जो सभी अनुवादकों पर लागू होती है-

हिंदी में जो तब अभाव था,
किया पूर्ण है कवि निष्काम
प्यार डार भावनाओं के स्वर,
उभरा करते उद्दाम,
यह प्रयोग था अपनेपन का,
जीवन का मनोरंजन स्त्रोत,
हिंदी में हो गई सुचर्चित,
रूबाइयाते उमर खैयाम।।

वास्तव में वसुधैव कुटूम्बकम् की भावना में काव्य जगत् का स्थान महत्वपूर्ण है । वह दिलों को जोडने वाला सेतू है। वैश्वीकरण की प्रक्रिया में इस प्रकार के काव्यानुवादों का योगदान महत्त्वपूर्ण है ।

संदर्भ –

१: श्री.कृष्णदत्त पालीवाल : मैथिलीशरण गुप्त: प्रासंगिकता के अंत: सुत्र पृ.१११
२: मैथिलीशरण गुप्त:रूबाइयात उमर खैयाम: पृ:२६-२७
३: सुमित्रानंदन पंत: मधुज्वाल :विज्ञापन,से
४: बच्चन:क्या भूलूँ क्या याद करूँ -पृ.२७१
५: बच्चन:उमर खैयाम की रूबाइयाँ: पृ.१०१-१०२

■ ■ ■

वैचारिक

समय का महत्त्व

हमें अपना हर काम समय पर करना चाहिए। यदि हम समय को बरबाद करेंगे तो हमारा जीवन भी बरबाद होगा। इसलिए हमें आलस्य छोडकर अपने कर्तव्य में लग जाना चाहिए।

कु. डावरे सुरेखा
एम.ए. (हिंदी)

समय दिखाई नहीं देता, पर सभी उसका महत्त्व स्वीकार करते हैं। जो समय का महत्त्व समझ लेता है, वही संसार में आगे बढता है।

आम तौरपर लोग धन को अधिक महत्त्व देते हैं, परंतु समय धन से भी अधिक मूल्यवान है। गया हुआ धन वापस मिल सकता है, पर बीता हुआ समय लौटकर नहीं आता। जो अवसर हाथ से निकल जाता है, वह फिर हाथ नहीं आ सकता। इसलिए समय को धन से भी अधिक महत्त्व देना चाहिए। समय को व्यर्थ गँवाना बहुत बडी भूल है।

मनुष्य जीवन में समय का बहुत महत्त्व है। वैज्ञानिकों ने रात-दिन एक करके नए-नए आविष्कार किए हैं। उनके कारण ही आज हमें बिजली, टेलिफोन, रेडियो, टि.वी., कम्प्युटर आदि मिल पाए हैं। लेखकों ने समय का सदुपयोग करके अच्छी-अच्छी पुस्तकें लिखी हैं।

महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरु, सरदार वल्लभभाई पटेल, लोकमान्य तिलक आदि नेताओं ने एक-एक क्षण का सदुपयोग किया, तभी हमें आजादी मिली ।

राष्ट्रपिता गांधीजी समय के पाबंद थे । स्वतंत्र भारत के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरु रोज अठारह घंटे काम करते थे । आलसी कामचोर और निठल्ले लोग समय का मूल्य नहीं समझते । वे समय का दुरुपयोग करते हैं । ऐसे ही लोग गुमराह होकर अपना जीवन बरबाद करते हैं । ये अपने परिवार, समाज और देश के लिए बोझ बन जाते हैं। समय का दुरुपयोग करनेवाले लोग कदम-कदम पर असफल होते हैं और भाग्य को कोसते हैं।

समय का सदुपयोग ही जीवन जीने का श्रेष्ठ मार्ग है । समय पर उठना, समय पर व्यायाम करना, समय पर भोजन करना, समय पर पठन-पाठन, काम-काज और शयन करना आदि समय का सदुपयोग है । सचमुच, समय एक दुर्लभ और अनमोल संपत्ति है । समय का सदुपयोग करके ही हम अपने जीवन में सफलता पा सकते हैं और राष्ट्र को भी उँचा उठा सकते हैं ।

हमें अपना हर काम समय पर करना चाहिए । यदि हम समय को बरबाद करेंगे तो हमारा जीवन भी बरबाद होगा । इसलिए हमें आलस्य छोडकर अपने कर्तव्य में लग जाना चाहिए। समय का सदुपयोग करके ही हम अपने जीवन को सफल बना सकेंगे । संसार में जितनी भी प्रगति हुई है, वह समय के सदुपयोग का ही परिणाम है । भली-भाँति पढाई करके समय का सदुपयोग करनेवाले विद्योर्थी ही परीक्षा में अच्छे अंक पाते हैं । समय का सदुपयोग करनेवाला व्यापारी काफी धन कमा सकता है । हम किसी भी क्षेत्र में काम कर रहे हो हमें समय का सदुपयोग करना चाहिए । जो समय का महत्व समझता है वही आगे बढता है । अन्यथा आजीवन पश्चाताप करना पडता है और जीवन असफल हो जाता है । हम सब समय का महत्व समझें और हम उसका सदुपयोग करें । भगवान से प्रार्थना है कि वह हमें इस प्रकार सद्बुद्धि दें कि हम समय का सदुपयोग करें और अपने देश, समाज और मानव जाति के काम आए।

■■■

''बंध नहीं पाया कभी जंजीर से
बंध नहीं पाया कभी तकदीर से
बंध गया मैं आज लेकिन दोस्तों
स्वप्न में देखी हुई तस्वीर से ।।''

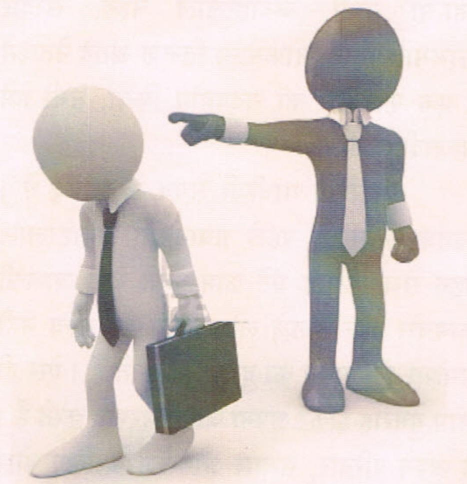

वैचारिक

चलो फिर से गुलाम हो जाए ?

> ''हम लाए हैं तूफान से किश्ति निकाल के
> इस देश को रखना मेरे बच्चों संभाल के ।''

कु. सुर्यवंशी सुनिता
टी.वाय.बी.ए.

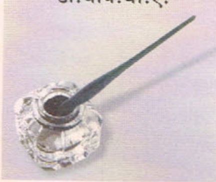

हो सकता है यह शीर्षक पढकर आपको एक पुराना गीत ''चलो इक बार फिर से अजनबी बन जाये '' याद आ जाएगा ।

कोई लडका किसी खुबसुरत लडकी को देखते ही, उसको पाना चाहता है, क्योंकि उसे लगता है कि अगर वह मिल जाएगी तो जन्नत मिल जाएगी । लेकिन जब यह जन्नत मिल जाती है, तो सारा दृश्य ही बदल जाता है । यह जन्नत जहन्नुम सी लगने लगती है ।

आजादी की स्थिति भी लगभग ऐसी ही है । आजादी पाने के लिए भारतियों ने क्या नहीं किया मगर आजादी पाने के बाद हालात सुधरने के बजाय दिनों-दिन बदतर होते चले गए । अब तो स्थिति यहाँ तक आ गई कि लोग कहेंगे.. चलो फिर से गुलाम हो जाए ! संभव है, आप मेरे विचार से पूरी तरह सहमत न हो । सहमत न होने का कारण यही होगा कि गुलामी एक सजा है, एक कलंक है, और हम क्यों अपने माथेपर

कलंक लगाए, क्यों सजा को खुद निमंत्रण दें । आपकी बात सौ प्रतिशत सही है, लेकिन जब सजा काट ही रहे हो, तो नाम बदलने से कुछ फर्क नहीं पडता अर्थात आजादी का अर्थ लाल किलेपर झंडा फहराकर भाषण दे देना ही नहीं है, बल्कि प्रत्येक को स्वतंत्रता के साथ जीने का अधिकार देना है । मगर भारत की आजादी से पहले भी, 'जिसकी लाठी उसकी भैंस' वाली बात थी, अब भी है । हाँ भले ही प्रगति हुयी हो मगर हालात नहीं बदले हैं । आज भी मार काट, गुंडागर्दी आदि सब कुछ मौजुद हैं, जिनके चलते आम आदमी वक्त तो काट सकता है, पर शान से जी नहीं सकता।

हमारे शासक हर बार बडी-बडी बातें करते हैं, लेकिन क्या हालात बदले हैं ? क्या महँगाई, भ्रष्टाचार, अनाचार कम हुआ है ? संविधान का कितना सम्मान होता है ? शायद नहीं क्योंकि, संविधान की अवहेलना कर अपना ही संविधान चलाने वाले 'दादा' लोग ही यहाँ मिलते हैं । रही बात न्याय की तो आजकल पैसों के बल पर वो भी मिल जाता है । अदालत को गवाहों के आधारपर निर्णय लेने होते हैं, और गवाह न मिले तो बेचारी अदालत क्या करें ? आँखों पर पट्टी बाँध लेती है । अब तो हालात ऐसे है कि सच बोलने का अर्थ है, मौत, इसलिए आजकल झूठ का बोलबाला है ।

अंग्रेजों ने भारत को जी भरकर लूट लिया था । सोने की चिडिया का सारा सोना वो अपने देश ले गए थे । आजादी के बाद इस साधारण सी चिडिया को फिर से सोने की बनाने के पूर्व ही देश के कर्णधारों ने उस चिडिया के पंख ही काट डाले हैं। आज ऐसा कोई भी क्षेत्र नहीं जिसमें भ्रष्टाचार नहीं । और देश की शांतता ? वो तो कब की भंग हो गई है । कहीं क्षेत्र को लेकर कहीं धर्म को लेकर, कहीं भाषा को लेकर फसाद मचते हैं। मारधाड, खून-खराबा !

नही ! नहीं !! ऐसा नहीं होगा । हमारी युवा पीढी ऐसा नहीं होने देगी । देश की बागडौर हमारे तो हाथों में है । हम अपने देश को फिर से गुलाम नहीं होने देंगे । देश को बर्बाद करने वालों को हम बर्बाद कर देंगे । भ्रष्टाचार, अनाचार, को जड से मिटा देंगे । हम नहीं भूल सकते कि हमारा देश सबसे महान है । ''सारे जहाँ से अच्छा हिंदुस्ताँ हमारा ।'' हमें ही तो इसे सबसे अच्छा बनाना है । फौलाद बनकर जुल्म को मिटाना होगा । सत्यं, शिवं, सुंदरं की स्थापना करनी होगी । बापू-नेहरु के आदर्श कायम रखने होंगे । हम शहीदों का बलिदान बेकार नहीं जाने देंगे ।

''हम लाए हैं तूफान से किश्ति निकाल के
इस देश को रखना मेरे बच्चों संभाल के ।''

■ ■ ■

''माँ है वह सख्त भी होकर न क्रूर होती है
मैली है फिर भी यह धरती न धूर होती है
पाँव से रोंदे नहीं, शीश पै धारो उसको
दोस्तों ! देश की मिट्टी सिंदूर होती है ।।''

कबीर की दार्शनिकता

समीक्षापर

> मीठी-मीठी माया तजि नहीं जाई ।
> अज्ञानी जीव को भोली-भोली खाई ।।

कु. साबळे संगिता
एम.ए. (हिंदी)

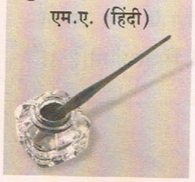

महात्मा कबीर अज्ञान के अंधकार से युक्त समाज में एक प्रकाश पुंज की भाँति उदित हुए । उनका व्यक्तित्व बहुमुखी प्रतिभा से संपन्न था । वे एकसाथ योगी, दार्शनिक, समाज सुधारक, भक्त, कवि, समीक्षक सबकुछ थे । उनके व्यक्तित्व की सबसे बडी विशेषता तो यह थी कि, वे किसी धर्म या विचार धारा के न होते हुये भी सभी के थे ।

कबीर परंपरा प्रचलित विविध दार्शनिक मतों की, सूक्ष्म अध्येता नहीं थी। उनका दार्शनिक चिंतन अपने व्यवहारिक ज्ञान और अपनी बहुश्रुतता पर आधारित है । कबीर जिस युग में हुए उसके पहले भारत में अनेकों की दार्शनिक चिंतनधारा का विकास हो चुका था। हिंदुओं के दार्शनिक चिंतनों का बोलाबाला था । हिंदुओं के अद्वैतवाद, इस्लाम के एकेश्वरवाद, बौद्धधर्म की सिद्ध और नाथयोगियों की दार्शनिक चिंतनधारा इन चिंतनधाराओं की गहराई में न उतरकर कबीरने सभी की मान्यताओं का आश्रय लेते हुये अपने मत का प्रचार किया ।

कबीर आँखों देखी को ही प्रमाण रूप में प्रस्तुत करते हैं। जीव के रहस्य को समझने के लिए संसार की उत्पत्ति और विनाश सृष्टि और उसके कर्ता के स्वरूप तथा परम सत्ता और जीव के विभिन्न संबंध ने विविध धार्मिक दार्शनिक मतवादों को जन्म दिया।

कबीर की दार्शनिकता के अंतर्गत ब्रम्ह, जीव, माया, जगत् तथा मोक्ष का अंतर्भाव होता है।

१) ब्रह्म :

कबीर ने ब्रह्म के दो रूप माने हैं। व्यक्त और अव्यक्त अर्थात सगुण और निर्गुण. लेकिन उनके काव्य में अधिकांशतः ब्रह्म के निर्गुण स्वरूप की अभिव्यक्ति मिलती है। उनके ब्रह्म निराकार निर्गुणातीत है। व्यवहारिक सत्ता के रूप में वह भक्तों द्वारा सृष्टि का कर्ता-धर्ता समझा जाता है। परंतु कबीर का मूल स्वर निर्गुण बह्म उपसनाही रहा है। कुछ स्थानोंपर कबीर ने ब्रह्म के सगुण रूप का भी वर्णन किया है। जैसे -

'सगुण निर्गुण ही नहीं कुछ भेदा'

कबीर सगुण ब्रह्म के प्रति अपनी भावना प्रकट करते हैं। वे भगवान के अनुग्रह को पाने की अभिलाषा व्यक्त करते हैं।

''कबीर कुता राम का मुतिया मेरा नाऊँ।
गले राम की जेवडी जित् खींचे तित जाऊँ।।''

कबीर के भगवान भक्त वत्सल हैं। अनंत करूणामय हैं और तिनों लोक की पीर को समझनेवाले हैं। कबीर के काव्य में दांपत्य संबंध के मिलन और विरह दोनों ही प्रकार के मनोरम चित्र पाये जाते हैं। कबीर ने अपने को दुलहीन या पत्नी के रूप में तथा भगवान को पति के रूप में मानकर दाम्पत्य संबंध का अत्यंत सरस चित्रण किया है।

कबीर के काव्य में विरह का चित्रण स्थान स्थानपर पाया जाता है। संत कवियों के अनुसार परमतत्त्व ही पारमार्थिक सत्य है वह सत्-चित्त, आनंद स्वरूप है। वह निर्गुण निराकार, निर्विकार, शाश्वत, अपार, असीम, अजन्म, सहकर्ता, अविनाशी, हृदयातीत, गुणातीत, संख्यातीत है। वह सूक्ष्म से सूक्ष्म और स्थूल से स्थूल है। परमात्मा के संबंध में अधिक कहा भी नहीं जा सकता असीम को भाषा में बांध सकना संभव नही हैं।

संतों ने अपने ब्रह्म को विभिन्न रूपों में चित्रित किया है परंतु कबीर ने ब्रह्म को एक कहा है -

''मुसलमान कहै एक खुदाई
कबीर के स्वामी घटी-घटी रह्यो समाई।।''

अर्थात संसार का कर्ता-धर्ता एक ही है और वह सर्वव्याप्त है। कबीर ने निर्गुण ब्रह्म का वर्णन निर्गुण वाचक विशेषणों द्वारा भी किया है। वे भगवान को अलख निरंजन आदि सबकुछ कहते हैं। कबीर ने ब्रह्म को सहज भी कहा है।

२) जीव (जीवात्मा)

सामान्यतः लोग जिसे मरता - जीता देखते हैं उसे जीव अथवा जीवात्मा कहते हैं। वस्तुतः वह आत्मा नहीं है। जो जन्म लेती है और मरता है। वह पंचतत्त्वों (आकाश, वायु, धरती, जल, अग्नी) से निर्मित शरीर है। जीवात्मा तो चिरंतन सत्य है।

कबीर ने जीव को निर्गुण निराकार माना है। कहीं-कहीं उसके आकाश रूप को भी अवधारणा दी है।

३) माया –

कबीर ने माया की कटु एवं तीव्र निंदा की

है । वे माया को भावमय भ्रम मानते हैं । वे माया को त्रिगुणातीत मानते हैं और कहते हैं कि सत्, तम् और रज के संयोग से माया का उदय हुआ है । कबीर ने माया को महाठगिनी भी कहा है । उसी माया के द्वारा सृष्टि का विस्तार हुआ है ।

माया से छुटकारा पाने से कोई लाख कोशिश करे परंतु वह माया से छुटकारा नहीं पा सकता । माया कभी माता-पिता, स्त्री-पुरूष, जप-तप एवं योग के रूप में बंधन डाल देती है । कबीर ने माया को डायन पापी की साथिनी, पिशाचिनी, डाकिनी, जादुगरनी, नकटी मोहिनी भी कहा है।

कबीर कहते हैं -

''मीठी-मीठी माया तजि नहीं जाई ।
अज्ञानी जीव को भोली-भोली खाई ।।''

कबीर के विचार में माया के सभी विकार माया के साथी है । माया के पाँच बेटे मनुष्य को किसी न किसी रूप में छलते रहते हैं ।

४) जगत :– (संसार)

कबीर ने जगत को मिथ्या (झूठ) और उसके मूल में निहीत आत्म तत्व को चिरंतन कहा है । कबीर ने भी जगत् की पारमार्थिक सत्ता स्विकार की है । ब्रम्ह संपूर्ण जगत में व्याप्त है परंतु लोग परमतत्त्व को भूल गये हैं । कबीर की दृष्टि से स्रष्टा वही है जो जगत में स्थिर रहनेवाला है । कबीर परमात्मा को जगत का कर्ता बताते हुए कहते हैं कि जिस प्रकार वणिक हाट का प्रसार कर देता है । उसी प्रकार सृष्टि ने इस निखिल विश्व का प्रसार कर रखा है ।

कबीर ने संसार को अनेक विध वासनाओं का केंद्र कहा है । ये वासनाएँ व्यक्ति के मन को बलात अपनी ओर आकृष्ट करती हैं । कबीर ने एक स्थान पर संसार को विषधरनाग कहा है।

एक रहस्यवादी के रूप में कबीर ने संसार को जीवात्मा रूपी स्त्री का नैहर कहा है । जैसे स्त्री नैहर में थोडे दिन रहकर अंततः पिहर (ससूराल) जाती है । जीवात्मा को संसार में बहुत अल्प समय तक निवास करना है । कबीर ने संसार के प्रति अपने विस्तृत दृष्टिकोण को स्पष्ट कर दिया है । उनकी दृष्टि से संसार माया का प्रपंच मात्र है । अतः कबीर मनुष्य को संसार आसक्तियों से दूर रहने की सलाह देता हैं ।

५) मोक्ष :–

मोक्ष का अर्थ है जीवन मरण के चक्र से छुटकारा । मोक्ष का ज्ञान होने से मनुष्य आसक्ति रहीत होता है । उसकी कर्म में प्रवृत्ति नहीं होती । कर्म में प्रवृत्ति न होने से उसका कर्म भोगने का प्रश्न ही नहीं उठता । अतः जन्म और मरण का क्रम समाप्त हो जाता है । जीवात्मा संसार से मुक्त हो जाती है और परम तत्व से मिलकर एकाकार हो जाती है । संसार के बंधनों से छुटकारा पाकर जीव वैकुंठ लोक में पहुंच जाता है ।

कबीरदास किसी वैकुंठ लोक में विश्वास नहीं करते । उन्होंने सब में एक राम की सत्ता लक्षित कर ली है । कबीर ने जीवन मुक्त होने की बात मान्य की है । उनके मोक्ष के संबंधी विचार स्पष्ट भारतीय दर्शन के अनुकूल हैं ।

■■■

खतरे में दुनिया। ९० साल बाद क्या होगा?

कु. सातपुते हर्षला

वैचारिक

बढती आबादी के आंकडे दुनिया के जटिल भविष्य की तस्वीर है। अब सात अरब की आबादी में ये हाल है कि दुनिया के कई गरीब राष्ट्र भोजन और पानी के लिए विकसित राष्ट्रोंपर आश्रित हो चुके हैं। नब्बे साल बाद पीने के लिए न पानी होगा, न खाने के लिए भोजन। गरीबी, भूखमरी संसाधनों की कमी, शहरीकरण और पर्यावरणीय प्रभावों ने दुनिया को हिलाकर रख दिया है। कल्पना कीजिए दस अरब की आबादी भविष्यको किस गढ्ढे में ढकेल देगी।

८० फीसदी रहेंगे शहरों में –

बढते शहरीकरण के चलते ये तय है कि गाँव खत्म होंगे और नए शहर बसेंगे। दुनिया की ८० फीसदी आबादी शहरों में ही रहेगी। दुनिया में इस समय करीब ७००० से ज्यादा भाषाएँ बोली जाती हैं। सैंकडो भाषाएँ खत्म होगी क्योंकि शहरीकरण के चलते अंग्रेजी का भाषायी अधिपत्य होगा।

बुजुर्गों की तादाद ज्यादा –

दुनिया की कुल आबादी में अभी बुजुर्ग ७.६ फीसदी है। परिवार चलाने और बाहरी ऊहापोह के चलते बढता दबाव युवाओं को कम उम्र में ही बुढापे की ओर ढकेल देगा। ऐसे में यह प्रतिशत बढकर २२.३ फीसदी तक जा सकता है। यानी आबादी में बुजुर्गोंका बडा हिस्सा होगा।

अफ्रीका की मुसिबत –

अफ्रीका की जनसंख्या वर्तमान में एक अरब से बढकर सन २१०० में ३.६ अरब हो जाएगी। यह बडा बदलाव होगा। इसके साथ ही विकासशील देशों में भी भीड बहुत बढ जाएगी।

तेल नहीं बचेगा –

गैस, पेट्रोलीयम पदार्थ, और खाद्य तेलों का बडा संकट देखना पडेगा। सन २०४० तक पाँच प्रतिशत की दर से उनका उत्पादन हर साल घटेगा। २१०० तक गैस की उपलब्धता बहुत कम रह जाएगी। हायड्रो एनर्जी और कुछ नए उर्जा स्त्रोतों को उपयोग में लाना होगा।

भोजन नहीं मिलेगा –

१९९५ के बाद खाद्य पदार्थों की बढती किमतों की वजह से आज ९२ करोड से ज्यादा लोग भूखे रहते हैं। ग्लोबल वार्मिंग का बढता प्रभाव भूखों की संख्या को बढाएगा। क्योंकि नब्बे साल बाद मौसम चक्र बहुत हद तक बदल जाएगा। उपजाऊ भूमि ४० से घटकर २० प्रतिशत रह जाएगी।

दुनिया की सबसे बडी चिंता –

दुनिया के लिए सबसे बडी चिंता यह है की, अगले ५० सालों में दो तीन अरब तक जनसंख्या बढेगी। उसकी न्यूनतम जरूरते कैसी पूरी की जाए ? पोषक खाना दुनिया के कई हिस्सो में पहले से ही ना काफी है। सरा के खाद्य एवं कृषि संघटन के अनुसार २०५० तक २ अरब और लागों को खिलाने के लिए खाद्यान्न उत्पादन ७० फीसदी और बढाना चाहिए। इतनी जनसंख्या बढनेसे २००७ से २०२५ के बीच विकसनशील देशों में पानी का इस्तेमाल ५० फीसदी और विकसित देशों में १८ फीसदी बढ जाएगा।
९० साल बाद यही होगा।

■ ■ ■

वैचारिक

सभी रोगों के लिए रामबाण हैं तुलसी।

कु. भालेराव जयश्री एम.ए. (हिंदी)

भारत भर में तुलसी के पौधें पाए जाते हैं। यह बडा वृक्ष नहीं बनता, केवल डेढ, या दो फूट तक बढता है। तुलसी का वानस्पतिक नाम ओसीमम सैन्कटम है। आदिवासी अंचलो में पानी की शुद्धता के लिए तुलसी के पत्ते जलपात्र में डाल दिए जाते हैं और कम से कम एक-सवा घंटे बाद पत्तों को पानी से छान लिया जाता है और फिर यह पीने योग्य माना जाता है। औषधि गुणों से भरपूर तुलसी के रस में थाइमोल तत्व पाया जाता है, जिससे त्वचा के रोगों में लाभ होता है। तुलसी एक ऐसी रामबाण औषधि है जो हर प्रकार की बीमारियों में काम आती है जैसे - स्मरण शक्ति, ह्रदयरोग, कफ, श्वास के रोग, पित्ताशय, खून की कमी, खाँसी, जुकाम, दमा और दंत रोग आदि। किडनी की पथरी में तुलसी की पत्तियों को उबालकर बनाया गया रस शहद के साथ नियमित ६ माह सेवन करने से पथरी टूट कर बाहर निकल आती है। दिल की बीमारी में यह तो वरदान है क्योंकि यह खून में कोलेस्ट्राल को नियंत्रित करती है। इसकी पत्तियों का रस निकालकर बराबर मात्रा मे नींबू का रस मिलाएं और रात को चेहरे पर लगाएँ तो झाइयाँ नहीं रहती, फुँसियाँ ठीक होती है और चेहरे की रंगत में निखार आता है। तुलसी के पत्तों का रस, सेंधा नमक मिलाकर पीने से फ्लू ठीक होता है। पातालकोट के आदिवासी हर्बल जानकर तुलसी को थकान मिटानेवाली एक औषधि मानते हैं। इनके अनुसार अत्याधिक थकान होने पर तुलसी की पत्तियों और मंजरी के सेवन से थकान दूर हो जाती है। इसके नियमित सेवन से क्रॉनिक-माइग्रेन के निवारण में मदद मिलती है।

■ ■ ■

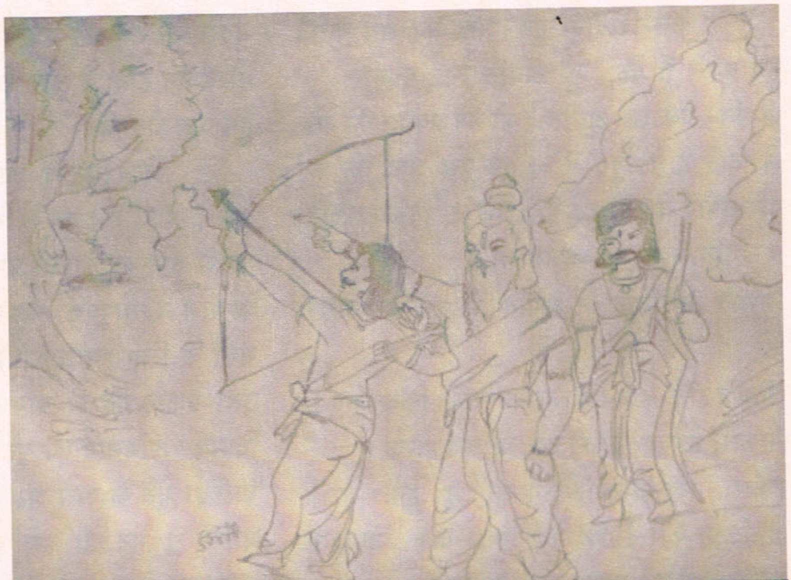

वैचारिक

गुरु की श्रेष्ठता ही शिष्य की श्रेष्ठता है।

> गुरु के बिना ज्ञान संभव नहीं है ।
> गुरु से ज्ञान वह व्यक्ति प्राप्त कर सकता है
> जो गुरु के पास नम्रतापूर्वक गया हो ।

प्रा. डावरे रोहिणी
हिंदी विभाग

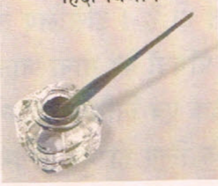

जिस प्रकार मनुष्य के जीवन में पानी हा महत्व है, वह पानी के बीना जीवित नहीं रह सकता उसी प्रकार मनुष्य के जीवन में आदर्श स्थापित करने के लिए गुरु का स्थान महत्वपूर्ण है । 'गुरु' शब्द में बहुत बडी शक्ति समाई हुई है । गुरु हमें अंधकार से प्रकाश की ओर, अज्ञात से ज्ञात की ओर ले जाते हैं। अर्थात गुरु के बीना जीवन व्यर्थ है । इसिलिए हिन्दी साहित्य के महामहिम संत कबीरदास गुरु का महत्व बताते हुए कहते हैं कि-

'गुरु गोविंद दोऊ खडे,
काके लागू पाय,
बलिहारी गुरु अपने,
जिन्ह गोविंद दियो बताय ।'

कुछ विव्दान 'गुरु' शब्द का अर्थ बताते हुए कहते हैं कि, 'गु' अर्थात - अंधःकार, 'रु' अर्थात- प्रकाश- अर्थात "जो हमें प्रकाश की ओर ले जाते हैं वे 'गुरु' " । गुरु इस शब्द की कईं परिभाषाएँ बतायी गई हैं । जैसे - 'गिरत्यज्ञानति' - अर्थात अज्ञान दूर करनेवाला ।

'गुणति धर्मामिति' - अर्थात जो धर्म का उपदेश करे ।

'गिर्य ते इति' - अर्थात जिसका स्तवन किया जाए ।

'गकारः सिद्धवः प्रोक्तो रेकः पापस्य हारक ।

उकारः विष्णुव्यक्तास्मितयात्मा गु गुरुः परः।'

अर्थात-ग कार-सिध्दि देनेवाला,र-कार- पापहारक है और उ-कार- अव्यक्त विष्णु का रुप है ।

अर्थात उपर्युक्त सभी गुण जिसमें विद्यमान हैं वह ही श्रेष्ठ गुरु है ।

आदरणीय एवं पूज्य व्यक्ति ही गुरु बन सकता है । 'ग्रंथ गुरुवतीचा ठावे' (ज्ञानेश्वरी- १.३३) 'अर्जुना हे गुरुवी भक्ति' (ज्ञानेश्वरी- ९.२२८) इस प्रकार संत ज्ञानेश्वर ने अपने भाई निवृत्तिनाथ को गुरु माना था । श्री गोविंदप्रभू भी श्री चक्रधर स्वामी के गुरु बने थे ।

गुरु अपने शिष्य को सफल जीवन जीने की दृष्टि प्रदान करते हैं । जिस प्रकार कुम्हार गीली मिट्टी को विशिष्ट आकार देकर घडे, आदि तैयार करता है उसी प्रकार गुरु अपने शिष्य को ज्ञानामृत पिलाकर व्यवहार कुशल एवं जिदंगी जीने में समर्थ बनाता है । ज्ञानसंपन्न गुरु के सान्निध्य में रहना तो प्रत्यक्ष परमेश्वर के सान्निध्य रहना होता है । हर मनुष्य की अपने गुरु पर श्रध्दा होनी चाहिए । इस जग में सर्वश्रेष्ठ धन 'विद्याधन' माना जाता है । 'विद्याधनं सर्व धनं प्रधानम्' इस प्रकार विद्या का गौरवगान होता है और यह सर्वश्रेष्ठ धन गुरु से ही हमें प्राप्त होता है ।

आज मनुष्य की प्रगति उच्च शिक्षा के कारण ही हुई है । गुरु के बिना ज्ञान संभव नहीं है । गुरु से ज्ञान वह व्यक्ति प्राप्त कर सकता है जो गुरु के पास नम्रतापूर्वक गया हो । जिस प्रकार पानी भरने के लिए हम खाली गागर पानी में डूबोते हैं उसी प्रकार गुरु से ज्ञान प्राप्त करते वक्त हमारा दिमाग- अभिमान एवं बूरे विचारों से खाली होना चाहिए। गुरु के पास शद्ध अंतःकरण से ही जाना चाहिए । गुरु ही हमें इस नश्वर जगत् रुपी भवसागर से पार ले जा सकते हैं । इस प्रकार मनुष्य जीवन में गुरु का महत्व अनन्य है ।

जीवन में जिन-जिन लोगों ने हमें अज्ञानता से दूर किया, जीवन जीने योग्य बनाया उन सभी को हमें आदर्श गुरु मानना चाहिए । गुरु की इसी महानता का गौरव गान करने के लिए अवतरण कहा गया है -

"गुरुर्ब्रम्हा, गुरुर्विष्णु, गुरुर्देवों महेश्वरः

गुरुर्साक्षात परब्रम्हः, तस्मै श्री गुरुवेनमः।"

इस का सृजन ही गुरु से आत्यंतिक श्रध्दा एवं ऋणात्मक भाव से हुआ है। गुरु की महानता सदियों से कायम रही है । 'महाभारत' के निर्माता व्यास के प्रति हर भारतवासी के मन में अत्यंत आदर भाव है । भारत की विशाल संस्कृति की नींव महर्षि व्यास का महाभारत ही है । इसिलिए तो 'महाभारत' को भारत का पाँचवाँ वेद माना जाता है । महर्षि व्यास के बौध्दिक एवं निर्भिक विचारों की कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए ही गुरुपौर्णिमा

मनायी जाती है ।

'गुरुपौर्णिमा' अर्थात जिससे अज्ञान, अंधःकार दूर हो । शुध्द, निर्मल एवं चाँद जैसा शीतलमय जीवन जिसके कारण मिला है; उस गुरु के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना शिष्य का कर्तव्य है । मनुष्य जीवन की उज्वलता किसके कारण है यह तो उस समय की परिस्थितियोंपर ही निर्भर होता है । सूरज से दिये तक, हाथी से चिंटी तक, हिमालय से टीले तक तथा दानव से मानव तक कोई भी किसी का गुरु बन सकता है । इस प्रकार युगयुग से गुरु की महानता टिकी हुई है ।

मनुष्य संस्कृति में सदगुरु का स्थान महत्वपूर्ण है । जिस संस्कृति में गुरु की महानता का आदर किया जाता है वही सद्संस्कृति है । जो बडा हो, विशाल हो वही गुरु है । अर्थात जिसमें लघुता न हो, जिसके विचार एवं मन विशाल हो, जिसमें हर एक को अपने में समा लेने की शक्ति हो, जो सदगुणों का निर्माता हो, जिसमें सद्बुध्दि हो, बुराई को नष्ट करने की शक्ति विद्यमान हो, अर्थात जिससे संपूर्ण सृष्टि का निर्माण हुआ वे ही परब्रम्ह परमेश्वर गुरु हैं । जिसमें तपस्विता हो, ओजस्विता हो वे ही गुरुपद के लिए पात्र होते हैं । जिसके सहवास से जीवन का सत्य सामने आ जाता है, ऐसे जीवन सत्य के दिशादर्शक गुरु ही होते हैं ।

भारत देश में गुरुपरंपरा महत्वपूर्ण मानी जाती है । राजा जनक के गुरु याज्ञवलक्य, कृष्ण-सुदामा के गुरु ऋषि सांदिपनी, राम-लक्ष्मण के गुरु वसिष्ठ, अरुणी-पांचाल के गुरु ऋषि धौम्य, कौरव-पांडव के गुरु द्रोणाचार्य आदि महत्वपूर्ण गुरु-शिष्य हो गए हैं।

''अज्ञान तिमिरांधस्य ज्ञानांजन शलाकाया,
चक्षु सम्मीलित ऐन तस्मै श्री गुरुवे नमः।।''

अर्थात अज्ञान रुपी अंधःकार नष्ट करनेवाले तथा अपने दिव्य चक्षु से शिष्य को दिव्य सृष्टि का परिचय करा देनेवाले गुरु वंदनीय होते हैं । ऐसे गुरु की पूजा ही सद्विचार की पूजा है । शिष्य की तपश्चर्या में ही गुरु का स्थान निहित है ।

भारत के सभी धर्मों मैं गुरु का उच्च स्थान है । हिंन्दू, बौध्द, जैन, सिख, ईसाई, मुसलमान आदि धर्मो में गुरु के प्रति पूजनीय भाव व्यक्त करने की परंपरा चली आ रही है ।

इस प्रकार मनुष्य जीवन पथ पर गुरु अपना आदर्श दिखा देते हैं । जीवन पथ से गुजरते वक्त मनुष्य को कई कठिनाइयों का सामना करना पडता है । तब अंधःकार में गुरु ही दीप बनकर प्रकाश दिखाता है ।

संत रैदास अपने गुरु के बारे में कहते हैं -

"रामानंद मोही गुरु मिल्यो,
पायो ब्रम्हविलास
रामानंद अमीरस पियो,
रैदास ही भयो पलास ।।"

इस प्रकार गुरु से ही ब्रम्हज्ञान की प्राप्ति होती है । जिसके कारण मनुष्य को राम नाम का अमृत मिल जाता है । गुरु के उपदेश में इतना बल होता है कि, मनुष्य संघर्षमय जीवन से मुक्ति पाकर आत्मसाधना से जीवन सफल बना लेता है ।

संत ज्ञानेश्वर गुरु के बारे में कहते हैं -

'गुरु संप्रदाय धर्म । तेचि जयाचे वर्माश्रम ।
गुरुपरिचर्या नित्यकर्म । जयाचे गा ।।'
(ज्ञानेश्वरी- १३.४.४४५)

अर्थात हमारे मन में सद्गुरु के प्रति हमेशा श्रध्दाभाव होना जरुरी है ।

"जाणतेन गुरु भजिजे ।
जेणे कृतकाया होईजे ।
जैसे मूळसिंचनी सहाजे ।
निगति शाखा पल्लव ।।"

अर्थात जैसे ही वृक्षों की जड तक पानी पहूँचने से उसकी वृध्दि होती है; वह विस्तृत होता है , उसी प्रकार जिसे ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा है, उसने गुरुचरण में नम्र होकर अपनी कृतज्ञता प्रकट करनी चाहिए ।

इस प्रकार मनुष्य जीवन का सच्चा सोना गुरुकृपा में ही है । गुरु के आशीर्वाद उपदेश, सहवास एवं अध्यापन से ही शिष्य के जीवन का मार्ग सुखमय हो जाता है। अर्थात प्राचीन गुरु-शिष्य परंपरा आज भी विद्यार्थी के लिए जरुरी है । आज गुरु-शिष्य परंपरा समाप्त होती दिखाई दे रही है । आज अध्यापन जीवन जीने का एक साधन बन चुका है। नई पीढि में संस्कृति एवं नीति परक संस्कारों का निर्माण होने की अपेक्षा इन संस्कारों को खो देने की प्रक्रिया ही ज्यादातर दिखाई दे रही है ।

अगर शक्तिशाली भारत का नवनिर्माण हमें करना हैं, तो फिर से एक बार नई पिढी में गुरु शिष्य परंपरा की जड को मजबूत करना जरुरी होगा ।

गुरु विद्या और संस्कार देता है और शिष्य जब नम्रता से उसे लेता है तब ही शिक्षा प्रक्रिया पूरी हो जाती है । ज्ञान देते समय गुरु अपनी ओर से सभी ज्ञान शिष्य को देता है किन्तु शिष्य वह पूरा ज्ञान ग्रहण करते हैं ऐसा नहीं । यदि ऐसा होता तो सारे के सारे शिष्य एक ही कोटी के बन जाते। जैसे - बारिश तो सभी ओर होती है किन्तु जहाँ बीज बोए वहीं फसल उग आती है मिट्टी के बिना बीज पत्थर पर नहीं उगते । इसी प्रकार अगर गुरु अच्छी शिक्षा दे रहा है और शिष्य उसे ठिक तरह से ग्रहण नहीं करता है तो इसमें गुरु का क्या दोष ?

माना कि, गुरु से ही शिष्य का मूल्यांकन होता है । जैसा गुरू वैसा शिष्य माना जाता है पर इसकी भी मर्यादाएँ हैं । जैसे- रामकृष्ण परमहंस के भी अनेक शिष्य थे किन्तु विवेकानंद जैसा दूसरा कोई न था । यह तो विवेकानंद के शिष्यत्व का गौरव है । अर्थात विवेकानंद के पास गुरुभक्ति, ज्ञान-लालसा और ईश्वर-दर्शन की तीव्र इच्छा ही उन्हें अपना अलगपन सिध्द कराने के लिए पूरक थी।

अगर अलग-अलग चार बर्तनों में हमने क्रमशः नमक, शक्कर, फिटकरी, पत्थर रखा और उसमें पानी मिलाया जाए तो नमक, शक्कर, फिटकरी पानी में घुल जाएगी किन्तु पत्थर पानी में घुल नहीं सकता अर्थात यह इन वस्तुओंके गुणधर्मों के कारण होगा इसमें पानी का क्या दोष ?

जीवन में सदगुरु मिलना यह नसीब की बात है । जिस प्रकार शिष्य गुरु की खोज में होता है; उसी प्रकार गुरु भी शिष्य की खोज में होते हैं । योग्य शिष्य मिलते ही गुरू अपना सारा ज्ञान पूर्ण रुप से शिष्य को दे देता है । इसी बुनियाद पर आज तक ज्ञान-दान की परंपरा चली आ रही है । गुरु से ज्ञान प्राप्त करने के बाद उसमें अपने व्यक्तिमत्व का रसायन घोल देना ही ज्ञानी बनना है। अर्थात यही उत्तम शिष्य का लक्षण कहा जा सकता है । इसी में

गुरु की श्रेष्ठता है ।

गुरु से प्राप्त ज्ञान को सही तरीके से समझकर उसे आत्मसात करना तथा उसका आचरण या उपयोग करना यही ज्ञानी शिष्य का काम है । ज्ञान से प्रज्ञा विकसित होती है । वह अधिक सक्षम बनती है । ज्ञान से अज्ञान का बंधन टूट जाता है । मन का भय दूर होकर शिष्य निर्भय बनता है । उसका मन बलशाली होता है । सभी, पूर्वग्रहदोषों से दूर जाकर एक विहग की तरह मुक्त संचार का अनुभव सच्चे ज्ञान से होता है । इसीलिए कहा जाता है - 'सा विद्या या विमुक्तये' अर्थात जो मुक्त कर देती है वही सच्ची विद्या है । ऐसी विद्या देनेवाला गुरू श्रेष्ठ होता है और ऐसे श्रेष्ठ गुरू का शिष्य भी श्रेष्ठ होता है ।

■■■

खोज

। नाईकवाडी सुजाता एस.वाय.बी.एस्सी.

संशोधनपर

अ.नं.	आविष्कार	आविष्कारक	देश	वर्ष
१)	एल्युमिनियम	एच. सी. ओरसेड	डेन्मार्क	१८२७
२)	अणुसंरचना	जॉन डाल्टन	इंग्लैड	१८०३
३)	क्लोरिन	कार्ल शीले	स्वीडन	१७७४
४)	विद्युत चुंबक तरंग	हेनरीच इट्र्च	जर्मनी	१८८६
५)	विद्युतीय चुंबकत्व	एच.सी. ऑर्सटेड	डेन्मार्क	१९२०
६)	विद्युत चुंबकीय प्रारणे	माइकल फॅराडे	इंग्लैड	१८८६
७)	इलेक्ट्रॉन	एम.जे. थॉमसन	ब्रिटेन	१८९७
८)	हीलियम	एस. डब्ल्यु. रॅमसे	ब्रिटेन	१८६८
९)	हायड्रोजन	हेन्री केवेन्डिश	ब्रिटेन	१७६६
१०)	विद्युत संवहन नियम	जॉर्ज ओहम	जर्मनी	१८२७
११)	गुरुत्वाकर्षण	गॅलिलिओ	इटली	१५९०
१२)	अणुसंख्या	हेन्री मोस्ले	ब्रिटेन	१९१३
१३)	गुरुत्वाकर्षण एवं गति का सिद्धांत	आइझॅक न्यूटन	ब्रिटेन	१६८७

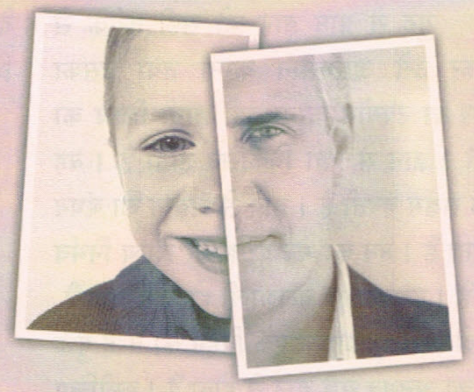

संशोधनपर

स्वातंत्र्योत्तर कहानी में चित्रित पिता-पुत्र का संबंध

डॉ. शेख अकीला
हिंदी विभाग

> स्वतंत्रता के पश्चात देश में सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक द्वन्द्वात्मक स्थितियाँ उभरकर सामने आयीं । मूल्यों के विघटन, मूल्य संक्रमण जीवन की विसंगतियों के कारण उत्पन्न संत्रास और तनाव आदि ने नवीन कथ्य देते हुए साहित्य सृजन के क्षितिज को विस्तृत कर दिया ।

स्वतंत्रता प्राप्ति हमारे देश के इतिहास की एक बहुत बडी क्रांति है । इस क्रांति ने हमें, गुलामी, निराशा, दुःख-दर्द आदि से मुक्ति दिलाई, अधुनिकता और वैज्ञानिकता के दरवाजे खोल दिए । ग्रामों के इस देश में महानगरीय सभ्यता और सांस्कृति का विकास होने लगा । महानगरीय विकास और औद्योगिकरण ने हमारे आंतरिक और बाह्य जीवन को बदलने में कोई कसर नहीं छोडी । हमारी जीवन दृष्टि में परिवर्तन आने लगा । संवेदना और भावनात्मकता समाप्त होने लगी । परंपरागत मूल्य या तो नए अर्थ देने लगे या नष्ट होने लगे । उनका अस्तित्व खतरे में पड गया ।

स्वतंत्रता के पश्चात देश में सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक द्वन्द्वात्मक स्थितियाँ उभरकर सामने आयीं । मूल्यों के विघटन, मूल्य संक्रमण जीवन की विसंगतियों के कारण उत्पन्न संत्रास और

तनाव आदि ने नवीन कथ्य देते हुए साहित्य सृजन के क्षितिज को विस्तृत कर दिया । 'कहानी' तो हर समय में मनुष्य के करीब होती है । स्वातंत्र्योत्तर कहानी में जीवन की सच्चाई और अनुभव की प्रामाणिकता दिखाई देने लगी । इसमें राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, पारिवारिक, आदि परिवर्तन प्रामाणिकता के साथ व्यक्त होने लगा। आधुनिकीकरण, प्रौद्योगिकी और पूंजीवादी व्यवस्था ने मानवीय संवेदना को समाप्त कर दिया । सामाजिक रिश्तों में बदलाव आने लगा । जीवन के शाश्वत मूल्यों का विनाश, टूटते परिवारों का संत्रास और केवल धन अर्जित करने की लालसा ने मनुष्य को मनुष्यता से ही वंचित कर दिया । अनास्था, कुंठा, निराशा के इस दौर ने पिता-पुत्र के संबंध को भी हाशिए पर लाकर खडा कर दिया और इस संबंध की जडें ही हिल गई ।

भारतीय संस्कृति में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की कल्पना सर्वमान्य है । इसीलिए भारतीय जीवन प्रणाली में परिवार को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है । इसमें 'मातृ देवो भवः, पितृ देवो भवः' का उपदेश देते हुए माता-पिता को देवों का दर्जा दिया गया है। 'मनुस्मृति' के अनुसार पिता प्रजापति की मूर्ति है तो 'महाभारत' के अनुसार पिता ही धर्म, स्वर्ग और तप है। उसके प्रसन्न होने पर देवता प्रसन्न होते हैं ।

'पिता' शब्द का अर्थ ही है - 'संतान का रक्षण और पालन-पोषण करने वाला और 'पुत्र' शब्द का अर्थ है - 'पुनाम नरकात् त्रायते इति पुत्रः। (अर्थात पुनामक नरक से पिंडदान करके पितरों को जो त्राण दिलावे वह पुत्र । और माता ? वह तो देहदात्री और ज्ञानदात्री होती है । पर आधुनिक काल में जीवन की व्यस्तता, व्यक्तिगत स्वार्थ, आत्मकेंद्रित प्रवृत्ति संकुचित दृष्टिकोण और अर्थ केंद्रित दृष्टि ने सबसे अधिक ठेंस 'परिवार' संस्था को ही पहुँचाई है । परिवार में विघटन होने लगा है, माँ-बाप बच्चों के लिए बोझ बन गये हैं । नई परिस्थितियों में बूढे माँ-बाप अपने आपको अनफिट महसूस करने लगे हैं। स्वातंत्र्योत्तर कहानी में इन्हीं परिस्थितियों का यथार्थ चित्रण हुआ है । पिता-पुत्र के सम संबंध, प्रेम संबंध का चित्रण कम या नहीं के बराबर ही हुआ है । आज्ञाकारी विवेकी, संयमी, स्नेहशील पुत्र का चित्रण बहुत कम कहानियों में हुआ है । तथापि पिता-पुत्र के विषम संबंधों की चर्चा अधिक हुई हैं । पिता-पुत्र में मूल्य एवं अधिकार की टकराहट, पिता का कठोर व्यवहार, पुत्र का अधिक पढ-लिख जाना, वृद्ध पिता की उपेक्षा, विवश-पिता, दयनीय-पिता, बेबस-मजबूर पिता, इन रूपों का चित्रण अधिक हुआ है । कुछ कहानी कारों का ध्यान पिता के कुकृत्यों पर भी जरूर गया है ।

'गिरवी रखी धूप' में 'मेहरून्निसा परवेज' ने पिता के प्रति परिवार की बढती उपेक्षा का मार्मिक चित्रण किया है । तंग आकर पिता जबलपूर में अपनी बहन के पास चला जाता है । एक साल तक उसकी खोज खबर नहीं ली जाती । पर जब उसकी पेन्शन बंद होने लगती है तब उसके पिता को घर लाया जाता है । उन्हें जिंदा देख ऑफिस का क्लर्क कहता है - ''कहो दादा, कहाँ रहे इतने दिन ? हम तो समझे थे कि दूसरी दुनिया

में पहुंच गए हो और घर के लोग अभी भी तुम्हारी कमाई खा रहें हैं .... चलो दादा, अच्छा हुआ, इसी बहाने तुम आ गए । वरना शक पर पेंशन बंद कर दिया जाता ।''

'मेहरून्निसा परवेज' की ही 'जमाना बदल गया है' कहानी का इकलौता पुत्र शहर जा कर बडा अफसर बन जाता है और वर्षों तक घर से दूर रहता है । जब वह अपने पिता का आदर नहीं करता तब उसकी पत्नी भी अपने ससूर का आदर नहीं करती । इसी तरह 'सूर्यबाला' की 'बाऊजी और बंदर' कहानी की बहू भी अपने ससूर को फालतू समझती है किंतु यहाँ पुत्र परिस्थिति के सामने घुटने टेक देता है । वह मजबूर है । पिता को वापस तो भेज देता है पर इस अपराध के लिए वह ईश्वर से माफी भी माँगता है ।

पुरानी पीढी अनुशासन प्रिय थी । इसलिए वह अपनी संतान से अनुशासनात्मक व्यवहार करती थी। पर पुत्र इस का बदला बुढापे में लेने की कोशिश करता है । वह अपने पिता की सद्भावना को कभी देख नहीं पाता । 'चित्रा मुदगल' की 'दशरथ का वनवास' इसी प्रकार की कहानी है। बचपन में रामनाथ अपने पिता के अनुशासनात्मक व्यवहार, कठोर व्यवहार का शिकार होता है । वह अपने पिता से नफरत करने लगता है । यहाँ तक कि पिता की मृत्यु के समय भी उनसे मिलने नहीं जाता । पिता की मृत्यु के बाद उसे एक पार्सल मिलता है। पार्सल में एक नई साईकिल है और उस पर पिता के आत्मीयतापूर्ण शब्द लिखे हैं । पिता कि सख्ती के पीछे पिता का प्रेम भरा हृदय भी था जिसे रामनाथ कभी देख नहीं पाया । और जब जाना तब बहुत देर हो चुकी थी ।

'चित्रा मुदगल' की ही 'गेंद' कहानी में नौकरी से रिटायर्ड सचदेवा की व्यथा की कथा है । पुत्र विनय ने इंग्लैंड में अपना परिवार बसा लिया । वह पिता को वृद्धाश्रम में भर्ति करा के निश्चिंत हो गया और सचदेवा बाहरी दुनिया में जीने की खुशियाँ ढुँढते हैं । 'राजी सेठ' की 'उसका आकाश' उपेक्षित पिता की कहानी है । उसके शरीर का आधा भाग मर गया है । उसका भरा-पूरा परिवार उसकी देखभाल - एक कर्तव्य समझकर करता है । पर जिंदगी की भागदौड और व्यस्तता के कारण वह एकाकी जीवन जीने को मजबूर है । इस प्रकार के अकेलेपन के कारण उसमें निराशा निर्माण होती है । उसे अपनी जिंदगी बोझ लगने लगती है । उसे जिंदगी मौत से भी ज्यादा पीडादायक लगने लगती है । सबकी नजरों में वह उपेक्षित बन जाता है ।

उसे कोई कुछ कहता नहीं है, पर सबके बर्ताव से उसे ऐसा लगता है जैसे सब उसकेमरने के इंतजार में है और वह खुद भी इसी इंतजार में है । खिडकी से दिखाई देने वाले आकाश से ही उसे संतोष करना पडता है । 'अर्चना शर्मा' की 'खलनायक' का पिता अपने बेटे को पढा-लिखाकर योग्य बनाता है । पर विवाह के बाद बेटा पत्नी का गुलाम बन जाता है और पिता की उपेक्षा करने लगता है ।

'शिवानी' की 'कैंजा' कहानी के पिता का अत्यधिक स्नेह पुत्र को गलत मार्ग पर ले जाता है । 'मृदुला गर्ग' की 'नहीं' कहानी का पिता पुत्र को चलती गाडी में चढाकर चोरी करना सिखाता

है। झोपडपट्टी के नारकीय जीवन को उजागर करनेवाली 'चित्रा मुदगल' की 'केंचुल', 'शिवानी' की 'मणिमाला की हँसी' आदि कहानियों में पिता-पुत्र के ऐसे ही संबंधों को चित्रित किया गया है । 'शिवानी' की 'मन का प्रहरी', 'तर्पण' आदि कहानियों के पुत्रों का जीवन पिता के कू-कृत्यों से कुप्रभावित हुआ है । 'शिवानी' की ही 'रथया' जैसी एकाध कहानी यह आशा पलुवित करती है कि आज के युग में भी आज्ञाकारी पुत्र है, जो पिता की अज्ञानुसार विवाह के बंधन में बंधते हैं । 'राजी सेठ' की 'पुनः वही' कहानी का पुत्र पश्चाताप करते हुए पितृ शोक से विह्लल हो जाता हैं । ऐसे चित्रण कम ही मिलते है।

आज जब पिता पुत्र पर निर्भर हो जाता है तब स्वार्थ और आत्मकेंद्रित प्रवृत्ति के कारण पुत्र उनकी उपेक्षा करता है । 'उषा प्रियंवदा' की 'वापसी' इस दृष्टि से उल्लेखनीय है । गजाधर बाबू के रिटायर्ड हो कर घर आने से पहले ही उनका बडा बेटा घर का मालिक बन बैठा था । अब उसे पिता का हस्तक्षेप करना, टोकना अच्छा नहीं लगता । पिता केवल पैसा कमाने का साधन था । उनकी उपस्थिति उस घर में ऐसी असंगत लगने लगी थी, जैसी सजी हुई बैठक में उनकी चारपाई । 'उसका घर' के पिता भी मध्यवर्गीय घरों में होने वाले संबंधों के विघटन को व्यक्त करते हैं । 'मंजुल भगत'की 'डेड लाईन' का पिता यद्यपि उच्च-संपन्न वर्ग का है, पर उसकी भी वैसी ही उपेक्षा होती है जैसे मध्यवर्गीय घरों में होती है ।

'अशोक सक्सेना' की 'ओवर एज' कहानी धन के अभाव के कारण टूटते रिश्तों का यथार्थ चित्रण करती है । यह कहानी नौकरी न मिलने से पिता और पुत्र के विक्षोभ को भी यथार्थ रूप में चित्रित करती है । इस तरह उच्च-शिक्षा ने भी पिता पुत्र में गहरी खाई निर्माण की है । 'मृदुला गर्ग' की ''लौटना और लौटना'' का हरीश पाँच साल अमरीका में रहने के बाद जब घर लौटता है तब उसे माँ बाप गँवार, असभ्य लगने लगते हैं । मृदुला गर्ग की, 'अलग-अलग कमरें', 'दिप्ति खण्डेलवाल' की 'एक और कब्र' 'राजी सेठ' की 'किसका इतिहास' 'शिवानी की' 'अनाथ' आदि कहानियों में पाश्चात्य देशों का आकर्षण है । उसी तरह पाश्चात्य संस्कृति किस तरह भारतीय संस्कृति और परिवारों को तोड रही है इसका भी यथार्थ चित्रण किया गया है । नये परिवेश में नयी पीढी ने माता-पिता को निरीह बना दिया है । आज जीवन स्तर की स्पर्धा में बूढे माँ बाप बेटों के लिए बोझ बन जाते हैं । जिस से संबंधों में दरारें पडती हैं। नयी परिस्थितियों में ये बूढे अनफिट हो गए हैं । उनकी स्थिति दयनीय हो गयी है। 'सुरेंद्र मंथन' की 'अपने लिए नहीं' यह कहानी इसी संवेदना को तीव्रता के साथ व्यक्त करती है । अपने उत्तर दायित्व को निभाते हुए पिता डॉक्टर इंजिनिअर बनाकर सफल करिअर और सुंदर जीवन देता है पर अंत में उपेक्षाही पाता है । तब बेटी सामने आती है । यह कहानी नया मोड लेकर समाज में बेटी की महत्ता को प्रतिष्ठित करती है । 'एक बेटा तो चाहिए ही' ऐसा कहने वालों को यह कहानी सोचनेपर मजबूर कर देती है तथा 'स्त्री भ्रूण हत्या' से बचाती है। आज इस प्रकार के कहानी लेखन की आवश्यकता निश्चित ही है ।

सूर्यबाला की 'निर्वासित' कहानी में बूढे माँ-बाप का बँटवारा आज की जीवन सच्चाई को व्यक्त करता है । आज पुत्र यदि माता-पिता का भार वहन करता है तो उन्हें अपनी सुविधानुसार आपस में बाँट लेते हैं । पिता के शब्द ''अब जब दो बेटे है, तो एक ही दोनों का खर्च उठाते, ठीक नहीं लगता न... ?'' है कि नहीं? ठीक ही सोचा है दोनों ने अभी यहाँ बेबी छोटी है, तुम यही रहोगी । सात-आठ महिने बाद छोटी की डिलीवरी होगी .... फिर तुम वहाँ चली जाओगी ..... छोटे के पास ।''

बदलते परवेश में वृद्ध पिता अकेलेपन व टूटन के शिकार हो रहे हैं । परंपरागत मूल्य तेजी से विघटित हो रहे हैं। रिश्तों में स्वार्थ है । इसी के आधार पर कहानियाँ लिखि गयी । पर आज समझौतावादी प्रवृत्ति जन्म ले रही है । रिश्ते समझौते के आधारपर निभाये जा रहे हैं। समकालीन कहानी कारों का इस ओर ध्यान कम ही गया है । पुत्रों के मुहताज माँ-बाप सब कुछ सहने को मजबूर हैं । सुनील और अपर्णा के व्यवहार की अमानवीयता, क्रूरता चरम सीमा में शाम व्यास की काल्पनिक कहानी 'डेथ क्लिनिक' में मिलती है । एक संपन्न परिवार की युवा संतान अपने बूढे और फालतू बाप को अधिक दिन सहन नहीं कर पाती । बेटी अपर्णा तार भेजकर सलाह देती है ; ''डॅडी ! सबका टॉलरेंस पूरा हो गया । आपका भी और हम बच्चों का भी । बेहतर है, अब क्लिनिक को स्वीकारे'' । विवश होकर जब पापा डेथ क्लिनिक जाने याने मरने का निर्णय लेते हैं तब उनके द्वारा भेजा गया तार मन को संवेदना से भर देता है - ''पापा इज सो नाईस'', वूई ॲप्रिसिएट हिज डिसीजन !''

संदर्भ ग्रंथ –

१) हिंदी कहानी के सौ वर्ष : डॉ. अमिताभ

२) समकालीन हिंदी कहानी :
- संम्पा. डॉ. प्रकाश माथूर

३) कमलेश्वर का कथा साहित्य :
- डॉ. माधुरी शाह

४) साठोत्तर हिंदी कहानी : मूल्यों की तलाश,
- डॉ. वासुदेव शर्मा

५) कहानी और परिवार :
- डॉ. सुनिता सक्सेना

६) साठोत्तरी लेखिकाओं की कहानियों में परिवार :
- डॉ. भारती शेळके

■■■

''जब तुम्हीं गये छोड तो जीना क्या है,
जब टूट चुके तार तो बीना क्या है
अब दूर करो दृष्टि से यह मधु के प्याले
साकी ही नहीं पास तो पीना क्या है ।।''

वैचारिक

क्या आप जानते हैं ?

कु. फोडसे सविता एस.वाय.बी.एस्सी.

१) आज मुद्रित समाचार पत्रों से लेकर नवीनतम इलेक्ट्रॉनिक जनसंचार माध्यम पत्रकारिता में शामिल हैं ।

२) समय और समाज के संदर्भ में सजग रहकर नागरिकों में दायित्व बोध कराने की कला को पत्रकारिता कहते हैं ।

३) वैज्ञानिक प्रगति के कारण वर्तमान समय में नए-नए इलेक्ट्रॉनिक माध्यम पत्रकारिता का चरित्र और उसका व्याकरण बदल चुके हैं । यह नयी पत्रकारिता वस्तुतः इलेक्ट्रॉनिक पत्रकारिता है ।

४) किसी भी लोकतांत्रिक देश में लोकतंत्र चार स्तंभों पर टिका रहता है - न्यायपालिका, विधायिका, कार्यपालिका और पत्रकारिता। पत्रकारिता यह चौथा स्तंभ अपने समाज को जागृत करता है उसे दिशा देता है, उसे एक व्यवस्था प्रदान करता है ।

५) पत्रकारिता को पाँचवा वेद कहते हैं ।

६) आजादी की आवाज जन-मन तक पत्रकारिता के माध्यम से पहूँची थी ।

७) प्रसिध्द शायर अकबर इलाहाबादी का निम्नलिखित शेर पत्रकारिता के महत्त्वपर प्रकाश डालता है -

''खींचो न कमानों को न तलवार निकालो ।
जब तोप मुकाबिल हो तो अखबार निकालो।।"

८) नेपोलियन के शब्दों में पत्रकारिता के क्षेत्र में काम करनेवाले शिकायतखोर, टिकाखोर, सलाहकार, बादशाहों के प्रतिनिधि और राष्ट्र के शिक्षक होते हैं चार विरोधपत्र चार हजार संगिनों से अधिक खतरनाक होते हैं ।

९) भारतीय पत्रकारिता का जन्म ही सुधारवादी आंदोलन, राष्ट्रीय जागरण, राष्ट्र प्रेम की भावना, स्वतंत्रता आंदोलन आदि के साथ हुआ ।

१०) विश्‍व का प्रथम समाचारपत्र एबीसी रिलेशन ओडर जिन्टींग सन १६०५ में जर्मनी के आसबर्ग नगर से निकला इसे एडॉलफ वेनसा ने प्रकाशित किया ।

११) भारतीय पत्रकारिता के जनक जेम्स ऑगस्टस हिकी माने जाते हैं ।

१२) ''हिंदी एक जानदार भाषा है, वह जितनी बढेंगी उतनाही देश को लाभ होगा ।''
- पं. जवाहरलाल नेहरु

१३) ''मेरी समझ में हिंदी भाषा सामान्य की भाषा होनी चाहिए ।'' - लोकमान्य तिलक

१४) ''देश के सबसे बडे भू-भाग में बोली जानेवाली हिंदी ही राष्ट्रभाषा पद की अधिकारिणी है ।'' - सुभाषचंद्र बोस

१५) ''हिंदी देश की एकता की कडी है ।''
- डॉ. जाकिर हूसेन

१६) "राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की एकता और उन्नति के लिए आवश्यक है।'' - डॉ. ॲनी बेझंट

■ ■ ■

आविष्कार

◆

हिंदी विभाग

काव्य कलश

◆

विभागीय संपादक

प्रा. शेटे बाळासाहेब

कौन अपना कौन पराया

कौन अपना कौन पराया,
इस दुनिया में तो,
सबकुछ है बेगाना ।
आते हैं अकेले, जाते हैं अकेले,
लगाए क्यों उम्मीद
किसी के साथ की,
सब कुछ पास है,
फिर भी बहुत दूर है ,
लगाए क्यों ऐसी आस,
बनाए जो बेचैन
जिंदगी एक हवा का झोंका है,
कभी तेज तूफान है,
तो कभी हलकी हवा है ।
रिश्तों के इस सेहरा में,
अपनों का अकाल है ।
कौन अपना कौन पराया
इस दुनिया में तो
सब कुछ बेगाना है ।।

कु. वाळुंज रोहिणी
एफ.वाय.बी.कॉम.

■ ■ ■

तो फिर क्यों रोते हो ?

पहले जिंदगी से खेलते आए हो
अब वही जिंदगी,
तुमसे खेल रही है
तो फिर क्यों रोते हो ?

पहले तो जिंदगी को समझा नहीं
अब वही जिंदगी
तुम्हें समझ गयी है
तो फिर क्यों रोते हो ?

पहले तो जिंदगी को बरबाद किया
अब वही जिंदगी
तुम्हें बरबाद कर रही है
तो फिर क्यों रोते हो ?

जैसा बीज बोया है
वैसा ही फल जब पाया है
है चक्र यही जिंदगी का
तो फिर क्यों रोते हो ?

भांगरे अशोक
एफ.वाय.बी.ए.

■ ■ ■

किताबें

करती हैं बातें,
बीते जमाने की,
दुनिया की, इंसानों की,
आज की, कल की,
एक-एक पल की
खुशियों की, गम की,
फूलों की, बमों की
जीत की, हार की,
प्यार की, मार की
क्या आप नहीं सुनोगे
किताबों की बातें ?
किताबें कुछ कहना चाहती हैं।
तुम्हारे पास रहना चाहती हैं,
किताबों में चिडिया चहचहाती है,
किताबों में खेती लहलहाती है,
किताबों में झरने गुनगुनाते हैं,
परियों के किस्से सुनाती हैं,
किताबों में रॉकेट का राज है,
किताबों में सायन्स की आवाज है
किताबों का कितना बडा संसार है
किताबों में ज्ञान की भरमार है
क्या आप इस संसार में
नहीं जाना चाहेंगे ?
किताबें कुछ कहना चाहती हैं,
हमारे पास रहना चाहती हैं ।।

कु. वाळके स्मिता
एफ.वाय.बी.ए.

■ ■ ■

अज्ञानी

जीवन है सपनों का सागर
इसमें डूब जाने को मन करता है ।
पर क्या करूँ ?
मुझपर हैं जिम्मेदारियाँ इतनी
इन सबको भूलकर आगे बढना पडता है ।
हँसते-हँसते आँखों में आँसू आते हैं ।
जब मुझको ये दुनियावाले
मेरी औकात याद दिलाते हैं ।
गरिब जरूर हूँ मैं
पर इसका मुझे कोई गम नहीं
पर एक काबिल इन्सान बनने के लिए
मैं किसी से कम नहीं ।
ब्रिटिशों का जुल्म सहा पराया समझकर
पर अपनों का क्या कहे
जो डँसे अपनों को ही विषैला नाग बनकर
दुःख होता होगा उन महात्माओं को,
यह सब देखकर, पर क्या करे ?
मेरे सेठ तो कहते हैं, दुनिया की
रेल चलती है इसी पटरी को देखकर।
अब क्या गलत और क्या सही
ये तो बात बेहतर जाने वही,
हम हैं गरीब तो गरीब सही,
पथ सच्चाई का छोडेंगे नहीं ।

कु. शेख मसीरा
११ वी कॉमर्स

■ ■ ■

"दिल"...
एक प्यारा-सा दिल ।

उलझनों से घिरा हुआ है ये दिल
आखिर मिलेगी कब मुझे मंजिल...?
कब और कहाँ बिखर गया है ये दिल,
न जाने क्यों सफर लगता है ये मुश्किल ।
दुनिया की नजरों से
दूर निकलना चाहता है ये दिल,
पर क्या करें कोई साथी चाहता है ये दिल ।
चाँद की बारात में खोया है ये दिल,
समुंदर की भँवर में फँस गया है ये दिल ।
फिर भी आस लगाए बैठा है ये दिल,
कभी तो आयेगा इस दिल के लिए
एक प्यारा-सा दिल ।।

कु. भांगरे सविता
एफ.वाय.बी.ए.

■ ■ ■

दोस्ती

बोले, वह दोस्ती
चुप रहे वह प्यार
मिलाए वह दोस्ती
जुदा करे, वह प्यार
हँसाये वह दोस्ती
रूलाये वह प्यार
फिर भी लोग
दोस्ती को छोडकर
क्यों करते हैं प्यार ।।

कु. पापळ दिपाली
एफ.वाय.बी.कॉम

■ ■ ■

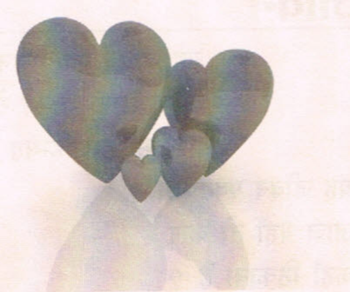

प्यार की एक कहानी

आओ सुनाऊँ प्यार की एक कहानी
अंधे लडके से प्रेम करती थी एक दीवानी
करता अफसोस लडका बेचारा
पर लडकी थी दीवानी
आँखें मिली दान में एक दिन
तो लडका बना दीवाना
सबसे पहले चाहा देखना उसे
जो थी उसके लिए दीवानी ।
आँखे खोली सामने देखा, अंधी लडकी
दीवानी ।
खुली आँखों ने प्यार को न समझा
कैसे करे अंधी से मुहब्बत
न समझा दीवाना ?
लडकी दीवानी बोली प्यार से
रखना ध्यान उन आँखों का
जो दी मैंने तुम्हें तोहफे में !
एक था लडका ...।।

कु. वाकचौरे प्रियंका
एफ.वाय.बी.कॉम

■ ■ ■

जीवन

यह जीवन एक तराना है,
कभी हँसना, कभी रोना है,
फिर भी इसे हिम्मत से जीना है,
यह जीवन एक पंछी है,
आज यहाँ तो कल
कहाँ ठिकाना है ?
यह जीवन एक पाठशाला है
कैसे जीना, कैसे रहना,
यही सीखकर सिखाना है ।
यह जीवन तो बडा अस्थायी है,
बस यहाँ गुजरा हुआ पल अपना है,
यहाँ आनेवाला कल सपना है ।

डोंगरे राहूल
एफ.वाय.बी.एस्सी.

■ ■ ■

बेवफा

मैंने रातों को दिन,
बनाया केवल तेरी ही याद में ।
मैं अपने आप को भूल गयी थी,
केवल तेरे ही खयालों में
बैठी रही सिर्फ तुम्हारे ही इंतजार में,
जिंदा रही सिर्फ तुम्हारी आशा में ।।
मैंने तो प्यार किया था दिल से
हो गयी थी दिवानी तुम्हारी याद में ।।
जहाँ भी अच्छा लगे तुम्हें,
वहाँ रहना बडे सुख से ....
मैं तुम्हें याद रखुंगी,
केवल बेवफा ही समझ के ।।

कु. देशमुख श्वेताली
एफ.वाय.बी.कॉम

■ ■ ■

कौन है पृथ्वी पर श्रेष्ठ

सभी प्राणियों की हुई बैठक तो,
मानव बोला बडे गर्व से,
पूछो अपने भगवान से
वह कहेगा मानव है श्रेष्ठ
जिसने किया है ये संसार भ्रष्ट
चलते-चलते सोचता है,
सोचते-सोचते करता है सर्वनाश
और होता है स्वस्थ !
इस सुंदर वसुंधरा को भी
समझता है तुच्छ
जाओ अपने भगवान से पूछो
कौन है पृथ्वीपर श्रेष्ठ !
भगवान कहेंगे मानव है श्रेष्ठ !
क्यों करता है निरा गर्व
क्यों मारता है इतनी शेखी
अरे क्या है तेरा जो स्वयं का है ?
सबकुछ तो भगवान ने दिया है
फिर क्यों तुमने अपने
नश्वर देहपर गर्व किया ?
जाग जा मानव अभी समय है!
लाभ उठा ले,
आज भी सत्य का
तेज इतना है कि,
तू अँधेरे में भी चल सकता है ।
सोच अभी भी सोच ,
जाग जा, बन निर्मोही
वरना कसम भगवान की,
प्राणियों ने दी मानव को सीख
क्यों स्वार्थ की माँगे भीख ?

कु. शेळके सुरेखा
एफ.वाय.बी.ए.

■ ■ ■

फूलों में काँटों का बडा ही महत्व है ।

फूलों में काँटों का
किचन में आटे का,
पढाई में चाह का,
बडा ही महत्व है ।
कमल में भँवरे का,
बालों में गजरे का,
आँखों में कजरे का,
बडा ही महत्व है ।
सब्जियों में भिन्डी का,
माथे पर बिंदी का,
भाषा में हिंदी का,
बडा ही महत्व है ।
ट्रॅफिक में सिग्नल का,
खेतों में हल का,
बर्तनों में पितल का,
बडा ही महत्व है ।
बाग में तितली का,
तालाब में मछली का,
फूलों में गुलाब का,
बडा ही महत्व है ।
जीवन में पानी का,
संसार में दानी का
किताबों में कहानी का,
बडा ही महत्व है ।
आकाश में सूर्य का
हवा में ऑक्सिजन का
संसार में मानवता का
बडा ही महत्व है ।

कु. भांगरे प्राजक्ता
एफ.वाय.बी.ए.

■ ■ ■

सच्ची बातें

ऐ आसमाँ तेरे खुदा का नहीं है, खौफ ।
डरते हैं ऐ जमीं तेरे आदमी से हम ।।
अंदाज अपना देखते हैं आईने में वो
और ये भी देखते हैं कोई देखता न हो ।।
दुःख में सुमिरन सब करे, सुख में करे न कोय ।
जो सुख में सुमिरन करे, दुःख काहे को होय ।।
भूले राही को तो मिल जाएगा रास्ता
हमको भी मिलेगी अपनी मंजिल
लेकिन जो मुसाफिर भुला बैठा सफर को अपने
वह कहाँ जायेगा ।
खुद बिगाडी हुयी तकदीर का शिकवा न करो
खुद भी बिक जाओगे एक दिन ये सौदा न करो ।।

कु. देशमुख मयुरी
११ वी कॉमर्स

■ ■ ■

वह कौन है ?

वह कौन है,
जिसे देता ये जहाँ सम्मान है ?
वह कौन है,
जो करता देशों का निर्माण है ?
वह कौन है,
जिस की छत्र छाया में मिलता ज्ञान है ।
वह कौन है,
जो मनुष्य को बनाता मनुष्य है ।
वह महान व्यक्ति गुरु है
ऐसे गुरु को मेरा शत-शत प्रणाम है ।

कु. डावरे पल्लवी
११ वी सायन्स

■ ■ ■

संकलन

अनमोल निधि

कबीर

१) जाको राखै साँईयाँ मारि न सकै कोय ।
बाल न बाँका करि सकै जो बैरी होय ।।

२) कथनी मीठी खाँड-सी करनी विष की होय ।
कथनी तजि करनी करै विष से अमृत होय ।।

३) जाति न पूछो साधु की पूछ लिजिए ज्ञान ।
मोल करो तरवार का पडा रहन दो म्यान ।।

४) काल्ह करै सो आज कर आज करै सो अब्ब ।
पल में परलै होएगी बहुरि करैगा कब ।।

५) जो तोको काँटा बुवै ताहि बोव तू फूल ।
तोहिं फूल को फूल है वाको है तिरसूल ।।

६) जिन ढूँढा तिन पाइयाँ गहिरे पानी पैठ ।
जो बौरा डूबन डरा, रहा किनारे बैठ ।।

७) करता था तो क्यों रहा अब करि क्यौ पछिताय ।।
बोवे पेड बबूल का आम कहाँ ते खाय ।।

८) बडा हुआ तो क्या हुआ जैसे पेड खजूर ।
पंथी को छाया नहीं फल लागै अति दूर ।।

९) निंदक नियरे राखिए आँगन कुटी छवाय ।
बिन पानी साबुन बिना निर्मल करै सुभाय ।।

१०) कबीरा सोई पीर है जो जानै पर पीर ।
जो पर पीर न जानई सो काफिर बेपीर ।।

रहीम

१) रहिमन प्रीति न कीजिए, जस खीरा ने कीन ।
ऊपर से तो दिल मिला, भीतर फाँकि तीन ।।

२) कहि रहीम संपत्ति सगे, बनत बहु रीत ।
बिपति कसौटी जे कसे, सो ही साँचे मीत ।

३) बडे बडाई ना करैं, बडे न बोलै बल,
रहिमन हीरा कब कहे, लाख टका मेरो मोल ।।

४) रहिमन नीचन संग बसि, लगत कलंक न काहि ।
दूध कलारी कर रहे, मदहि कहैं सब ताहि ।।

५) रहिमन जिव्हा बावरी, कहिगै सरग पताल ।
आपु तो कही भीतर रही, जूती खात कपाल ।।

६) रहीमन देखि बडेन के, लघु न दीजिए डारि ।
जहाँ काम आवै सुई, कहाँ करै तरवारि ।।

७) रहिमन विद्याबुद्धि नहीं, नहीं धरम जस दान ।
भू पर जनम वृथा धरै, वसु बिनु पूंछ विषान ।।

८) रहिमन पानी राखिए, बिनु पानी सब-सून ।।
पानी गए न ऊबरै, मोती, मानुस चून ।।

९) समय पाय फल होत है, समय पाय झरि जाय ।
सदा रहै नहिं एक-सी, का रहीम पछिताय ।।

मेंगाळ संदिप
(संकलन)
टी.वाय.बी.ए.

दौड

शहर की इस दौड में
दौड के करना क्या है ?
अगर सही जीना है दोस्तों
तो फिर मरना क्या है ?
पहली बारीश में
ट्रेन लेट होने की फिक्र है..
भूल गये भीगते हुए
टहलना क्या होता है....
सिरियल्स के किरदारों का
सारा छल मालूम होता है,
पर माँ का हाल जानने की
फुरसत कहाँ होती है ?
अब रेत पे नंगे पैर
टहलते क्यों नहीं ?
१०८ हैं चैनल, पर
दिल बहलता क्यों नहीं ?
इंटरनेट से सारी
दुनिया से तो टच में हैं
लेकिन पडोस में कौन
रहता है मालूम नहीं
मोबाईल, लॅण्डलाईन
सब की भरमार है
लेकिन जिगरी दोस्त तक
पहुँचे ऐसे तार कहाँ है ?
कब डूबते हुए सूरज को
देखा था, याद है ?
तो दोस्तों शहर की
इस दौड में दौड के करना क्या है ...!!

कु. नाईकवाडी उज्वला
टी.वाय.बी.ए.

■ ■ ■

जिंदगी

हां । अब तो दर-दर की ठोकरें खाकर
कुछ अपनी तबियत जुदा लगती है
साँस लेता हूँ तो जख्मों को हवा लगती है
सब बिछड गये मुझसे
अब क्या बचा मेरे पास
कभी राजी तो कभी खफा
मुझसे लगती है ।
जिंदगी तू ही बता तू मेरी क्या लगती है ।
न जाने क्यों तेरी याद हर-पल आती है
न जाने क्यों मिलकर बिछडना याद आता है
मैं रो पडता हूँ जब
गुजरा जमाना याद आता है ।।

कु. देशमुख मयुरी
११ वी कॉमर्स

■ ■ ■

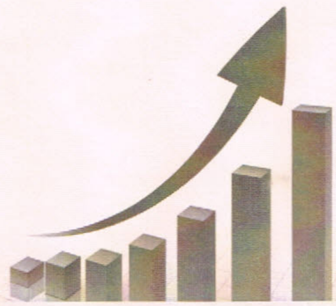

उडान

आसमान में उडने की तमन्ना है हमारी,
पर जिंदगी की इस उडान में,
किसीने हमारे पंख काट दिये ।
फूलों की तरह बहरने की आरजू है हमारी,
पर बारीश की एक बूँद की आस में
हम प्यासे ही रह गये ।
सूरज की रोशनी सी जगमगाने की चाह है हमारी,
पर सहेर के इंतजार में
हम लौ बनके, जलते रह गए ।
हर पल में खुशी भरने की चाह है हमारी,
पर सुख की तलाश में,
हम गुमराह बनकर रह गये ।
इंसानियत से जीने की उमंग है हमारी,
पर इंसान बनने की कोशिश में
हम दुनिया से ही बिछडते गये ।
फिर भी थकी हूँ जरुर, पर हारी नहीं हूँ

कु. जाधव ऐश्वर्या
११ वी सायन्स

■ ■ ■

डेवलपमेंट

देश का यह कैसा डेवलपमेंट हो रहा है ।
बेईमान भी परमनंट हो रहा है ।
इमानदार सस्पेंड हो रहा है ।
देश का यह कैसा डेवलपमेंट हो रहा है ।
आज हर काम अंडरवर्ल्ड से हो रहा है ।
पैसेवाले का हर काम अर्जंट हो रहा है ।
गरीब बेचारा सर्व्हंट हो रहा है ।
देश का यह कैसा डेवलपमेंट हो रहा है ।
डॉक्टर का यह कैसा ट्रिटमेंट हो रहा है ?
स्वस्थ आदमी पेशंट हो रहा है ।
नौकरी में यह कैसा रिक्रुटमेंट हो रहा है ?
भाई-भतीजे का ही अपॉईंटमेंट हो रहा है ।
देश का यह कैसा डेवलपमेंट हो रहा हैं ।

कोटकर श्रीकांत
१२ वी सायन्स

■ ■ ■

रिश्ते

भाई-बहन का प्यार निराला है,
एक धागा रखवाला है
भाई-बहन ऐसे
सूरज-किरन जैसे
भाई के आँसू जब
बहन को बिदाई देते हैं
फूलों में कलियों में साजन
की गलियों में
तुम मुस्कुराये युँही,
दुवाएँ हजारों देते हैं ।

कु. शोभा शेटे
टी.वाय.बी.ए.

■ ■ ■

मुहब्बत

एक Hard-disc थी दीवानी-सी,
एक Processor पर वो मरती थी
चुपके से शरमाके Bip दिया करती थी
कुछ कहना था शायद उसको,
लगता है RAM से डरती थी
जब भी operate होती, मुझसे पूछा करती..
मैं कैसी हूँ ? मैं fail कैसे होती हूँ ?
और मैं बस इतना ही कह पाता की ....
PC चालु हो या हो बंद, दीदार ना तेरा होता है
कैसे कहुँ मैं ओ यारा ये Virus Attack कैसे होता है
क्या है ये जादू बस मैं fail हो जाती हूँ
Paging, Segmentation के
Funde छोड चली जाती हूँ
दूर कहीं Network पर होते हैं ये सारे फैसले
कौन जाने कोई हमसफर Worm कब कैसे कहाँ लगे
जो Network port तेरा ही खुला,
Attack वहीं से ही होता है,
कैसे कहूँ मैं ओ यारा ये Worm Attack क्या होता है,
Pendrive, CD, DVD, Floppy कुछ भी चल जाता है
तोडके पहरे हजारो Virus ये घूस जाता है
किसी के साथ Sharing करते हुए
खुदको हमने वो लगा लिया
उसी की बाहों में Execute होकर, खुदको हमने जला लिया ।
ऐ यार Attack में कोई Programme
ना fast ना slow होता है
कैसे कहूँ मैं ओ यारा ये Malware Attack क्या होता है ?

योगेश चौधरी
एस.वाय.बी.ए.

■ ■ ■

प्यार

ढूँढों तो तुम्हें चाहनेवाले,
कम ना मिलेंगे ।
मिल जाएँगे हम जैसे,
लेकिन, हम ना मिलेंगे ।
दो-चार मुलाकातों में ही,
कोई अपना नहीं बनता ।
लेकिन ऐसा भी नहीं,
कि कोई सपना नहीं सजता
वादों का मतलब,
इकरार नहीं होता ।
खामोशी का मतलब,
इन्कार नहीं होता ।
नजरें तो मिलती हैं ,
हजारों से पर,
हर नजर का मतलब
प्यार नहीं होता ।

योगेश चौधरी
एस.वाय.बी.ए.

■ ■ ■

कश्मीर

पानी को तलवार काट नहीं सकती
हवा को रस्सी बाँध नहीं सकती
फूल से दुर्गंध आ नहीं सकती
आकाश में खेती हो नहीं सकती
जमीन से बारिश हो नहीं सकती
मानव सूरज पे रह नहीं सकता
आरंभ बिना अंत हो नहीं सकता
काँटों बिना गुलाब हो नहीं सकता
दुःख बिना सुख हो नहीं सकता
हवा बिना जीवन हो नहीं सकता
ठीक इसी तरह
कश्मीर को भारत से कोई
अलग कर नहीं सकता

कु. शोभा शेटे
टी.वाय.बी.ए.

■ ■ ■

दोस्ती

आँखों में नमी है
होठों पर खुशी है
ये जीवन कैसा है ?
कभी बातों से लुभाये,
कभी खुशियाँ लुटाए,
कभी लगे ये सपाना है ।
पर,
मैं और मेरी सहेलियाँ
ना होंगे कभी जुदा,
दुनिया छूटे तो छूटे,
ये बंधन कभी ना टूटे
ये अपना वादा रहा ।
खाई थी हमने कसम
तोड के सारी रस्में
रहेंगे सदा एक हम

कु. धुमाळ सुरेखा
टी.वाय.बी.कॉम.

■ ■ ■

मिलावट !

आज हमारे देश में
सिर्फ मिलावट ही मिलावट है ।
दूध में मिलावट पानी की,
साँस में मिलावट धुँवे की ।
अखबार में मिलावट झूठ की ।
सुंदरता में मिलावट घमंड की ।
फॅशन में मिलावट दिखावे की ।
नींद में मिलावट सपनों की ।
दिल में मिलावट सदमों की,
और प्यार में मिलावट !
प्यार में मिलावट मतलब की ।

मंगेश नवले
एस.वाय.बी.ए.

■ ■ ■

१४ सितंबर - हिन्दी दिन- स्वागतगीत

शुभ अवसर स्थान परिसर, अकोले पावन नगर,
ज्ञान मंदिर, शोभा सुंदर, वर्षा ऋतु की बहार ।।धृ।।

हिन्दी दिन का यह उत्सव है प्यारा ।
छात्र-अध्यापक संगम है न्यारा ।
ज्ञान-सरिता की अखंड धारा ।
खेल विधाता का है ये सारा ।

एक ही बिनती, महेमानों के प्रति , करो सेवा का स्वीकार ।।१।। ज्ञान...

देश सेवा का सुवर्ण प्रण ।
पर्यावरण करें संरक्षण ।
हर मन ने यही ली है ठान ।
मेरे भारत की बढाये शान ।

एक ही मौका, जन्म मानव का । विश्व कल्याण का ही विचार ।।२।। ज्ञान...

भेदभावों को रखेंगे दूर ।
भारतवासी की सूरत पे नूर ।
अमीर-गरिबों का एक सूर ।
शुद्ध पवित्रता रुपी नीर ।

नवयुवकों झगडे को रोको, अशांति का करे संहार ।।३।। ज्ञान मंदिर...

मन में रखे ना कोई आशंका ।
नीतिहीनता मानव को धोखा ।
जन-मानव को जोडने का मौका ।
हिन्दी भाषा यह साधन है पक्का ।

एक कोशिश, सिर पर आशिष, सदा ही रखो अपार ।।४।। ज्ञान मंदिर...

ज्ञान, संस्कार महासागर ।
'अकिलाजी' की है एक पुकार ।
प्रेमफूलों की सदाबहार ।
मिलके करें इसे स्विकार ।

एक चुनौति, प्यार के मोति । जुटा के भरे भंडार ।। ५।। ज्ञान मंदिर...

प्रा. डावरे रोहिणी
हिंदी विभाग

ताल - 'बाप्पा मोरया रे'

■ ■ ■

हरिवंशराय बच्चन जी की कुछ रुबाइयाँ

संकलन

स्वयं नहीं पीता, औरों को, किंतु पिला देता हाला
स्वयं नहीं छूता, औरों को, पर पकडा देता प्याला,
पर उपदेश कुशल बहुतेरों से मैंने यह सीखा है,
स्वयं नहीं जाता, औरों को पहुंचा देता 'मधुशाला' ।।

मैं कायस्थ कुलोद्भव, मेरे पुरखों ने इतना ढाला,
मेरे तन के लोहू में है पचहत्तर प्रतिशत हाला,
पुश्तैनी अधिकार मुझे है, मदिरालय के आँगन पर,
मेरे दादा-पर दादों के हाथ बिकी मधुशाला ।।

पितृ पक्ष में, पुत्र, उठाना अर्ध्य न कर में, पर प्याला,
बैठ कहीं पर जाना गंगा सागर में भरकर हाला,
किसी जगत की मिट्टी भोगे, तृप्ति मुझे मिल जाएगी,
तर्पण-अर्पण करना मुझको पढ-पढकर के मधुशाला ।।

मृदु भावों की अंगूरों की आज बना लाया हाला,
प्रियतम, अपने ही हाथों से आज पिलाऊँगा प्याला,
पहले भोग लगा लूँ तेरा, फिर प्रसाद जग पाएगा,
सबसे पहले तेरा स्वागत, करती मेरी मधुशाला ।।

किसी ओर मैं आँखें फेरुँ दिखलाई देती हाला,
किसी ओर मैं आँखें फेरु दिखलाई देता प्याला
किसी ओर मैं देखूँ, मुझको दिखलाई देती साकी,
किसी ओर देखूँ, दिखलाई पडती मुझको मधुशाला ।।

कुचल हसरते कितनी अपनी हाय बना पाया हाला,
कितने अरमानों को करके खाक, बना पाया प्याला,
पी पीने वाले चल देंगे, हाय ना कोई जानेगा,
कितने मन के महल ढहे, तब खडी हुई यह मधुशाला ।।

धर्म ग्रंथ सब जला चुकी है, जिसके अंतर की ज्वाला,
मंदिर मस्जिद गिरजे सबको तोड चुका जो मतवाला,
पंडित, मोमीन पादरियों के फंदों को जो काट चुका
कर सकती आज उसीका स्वागत मेरी मधुशाला ।।

हाथों में आनेसे पहले नाज दिखाएगा प्याला,
अधरों पर आनेसे पहले अदा दिखाएगी हाला,
बहुतेरे इनकार करेगा, साकी आने से पहले,
पथिक न घबरा जाना पहले, मान करेगी मधुशाला ।।

मधुर तिक्त जीवन का मधु कर पान निरंतर,
मथ डाला हर्षोव्देगों से मानव अंतर,
तुमने भाव लहरियों पर जादू के स्वर से,
स्वर्गिक स्वप्नों की रहस्य ज्वाला सुलगा कर ।।

तरुण लोक कवि, वृध्द उमर के संग चिर परिचित
पान करो फिर, प्रणय स्वप्न स्मित मधु अधरामृत
जीवन के सतरंग बुदबुद पर अर्थ निमीलित
प्रात दृष्टि निज डाल साथ ही जाग्रत विस्मृत ।।

पथवे लक्ष्मण
संकलन
टी.वाय.बी.ए.

■ ■ ■

राष्ट्रीय सेवा योजना (वरिष्ठ महाविद्यालय)

कार्यक्रम अधिकारी

प्रा. यासीन सय्यद

प्रतिनिधी

कु. शेळके पल्लवी

दि. ११ सप्टेंबर २०११ गणेशमूर्ती व निर्माल्य दा
रा.से.यो.चे स्वयंसेवक

दि. ०८ ते १४ डिसेंबर २०११ वाघापूर
'समाजासमोरील प्रश्न व प्रसार माध्यमांची भूमिका' या
विषयावर मार्गदर्शन करतांना सकाळचे मुख्य बातमीदार मा.भागा वरखडे

सर्प – समज – गैरसमज प्रा. मधुसूदन दिवेकर
प्रा. कोकणे, प्रा.डॉ. बाबासाहेब देशमुख, प्रा.यासीन स

१ फेब्रुवारी २०१२ कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, अशोकनगर येथे
आपत्ती व्यवस्थापन कार्यशाळेप्रसंगी प्राचार्या वंदना मुरकुटे सर्प हातात घेताना

आपत्ती व्यवस्थापन प्रात्यक्षिक करतांना प्रा.डॉ. दत्तात्रय
विजय पवार व स्वयंसेवक

९ सप्टेंबर २०११ – शाहुनगर परिसर स्वच्छता मोहिम प्रसंगी अकोल्याच्या सरपंच सौ. सुमनताई जाधव मार्गदर्शन करतांना

दि. १३ ऑक्टोबर २०११ रक्तदान शिबीर ५१ पिशव्या रक्त जमा प्रसंगी प्रा. यासीन सय्यद व डॉ.सौ. धुमाळ मॅडम

दि. ९ ऑक्टोबर २०११ कळसूबाई मंदिर परिसर स्वच्छ करतांना स्वयंसेवक

विशेष हिवाळी शिबीर उद्घाटन दि. ८ ते १४ डिसेंबर २०११ वाघापूर– मा.जे.डी.आंबरे पा., मा. मगनराव येलमामे, मा.निवृत्ती दादा साबळे, प्राचार्य रमेशचंद्र खांडगे विद्यापीठ प्रतिनीधी कु. पूनम कदम

नियमित कार्यक्रम – महाविद्यालयाचा परिसर स्वच्छ करतांना स्वयंसेवक

विशेष हिवाळी शिबीर – वाघापूर घाटरस्ता तयार करताना स्वयंसेवक

विशेष हिवाळी शिबीर समोरप प्रसंगी प्रास्ताविक करतांना कार्यक्रम अधिकारी प्रा. यासीन सय्यद

नियमित कार्यक्रम – दि. २-४ डिसेंबर २०११ रोजी समर्थ कन्या विद्या मंदिर राजूर येथे आपत्ती व्यवस्थापन शिबीर सहभागी स्वयंसेवक

राष्ट्रीय सेवा योजना (कनिष्ठ महाविद्यालय)

कार्यक्रम अधिकारी

प्रा. गणपत नवले

रा.से.यो. प्रतिनिधी

कु. मोनिका वाकचौरे

प्रजासत्ताक दिन संचलन निवड चाचणी
कोल्हापूर शिबीर

कु. रेश्मा बंगाळ

विशेष हिवाळी शिबीर
'अगस्ति आश्रम'
श्रमदान करतांना स्वयंसेवक.

विशेष हिवाळी शिबीर
'अगस्ति आश्रम'
श्रमदान करतांना स्वयंसेवक.

NSS

विशेष हिवाळी शिबीर
उद्घाटक – मा.ॲड. के. डी. धुमाळ
अध्यक्ष, अगस्ति देवस्थान ट्रस्ट
मनोगत व्यक्त करताना.

विशेष हिवाळी शिबीर
मा.प्राचार्य रमेशचंद्र खांडगे
मनोगत व्यक्त करतांना...
सोबत उद्घाटक,
रा.से.यो. कार्यक्रम अधिकारी,
स्वयंसेवक व इतर मान्यवर

विशेष हिवाळी शिबीर
समारोप समारंभ प्रसंगी
कार्यक्रम अधिकारी प्रा. गणपत नवले
पाहुण्यांचे स्वागत करतांना.

विशेष हिवाळी शिबीर
समारोप समारंभ प्रसंगी
मनोगत व्यक्त करतांना स्वयंसेवक

तीन अंकी नाटक -
'मुक्काम पोस्ट बोंबीलवाडी'

विविध गुणदर्शन
कनिष्ठ महाविद्यालय

अपंग असलो तरी
कलाकार आहे !

वासुदेव साकारतांना
अपंग विद्यार्थी
चि. महेश मंडलीक

विविध गुणदर्शन वरिष्ठ महाविद्यालय

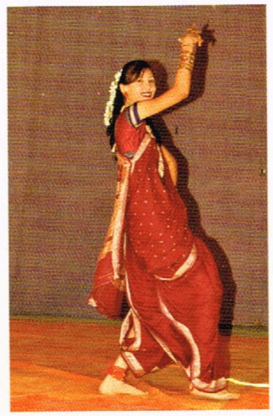

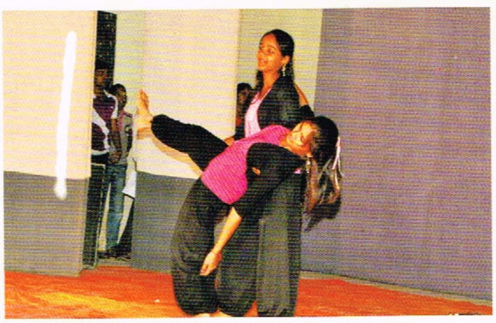

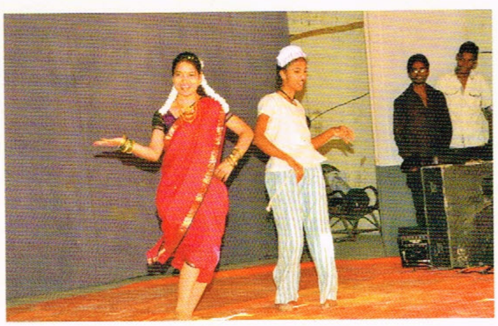

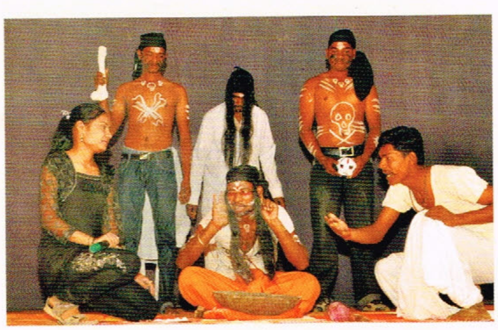

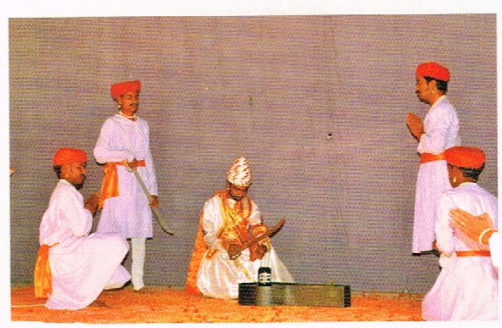

आंनद मेळावा

पालक मेळावा उद्‌घाटन प्रसंगी
श्री महिला गृहोद्योग समुहाचे
मान्यवर व इतर प्रमुख पाहुणे
मा. सुरेशराव कोते

पारितोषिक वितरण समारंभ

'दोन मिनीटांसाठी जबरदस्तीने डोळे मिटून बघा
अंधाराचे विश्व कसे असते ते!' आणि म्हणूनच
प्रमुख पाहुणा चि. चेतन उचितकर व मान्यवर

प्रमुख पाहुणा चि. चेतन उचितकर याचा सन्मान करतांना
मा. प्राचार्य रमेशचंद्र खांडगे सर,
संस्थेचे विश्वस्त मा.डॉ.बी.जी.बंगाळ व इतर मान्यवर

'स्टुडंट ऑफ दी इयर' - योगेश चौधरी

महाविद्यालयाचे पर्यवेक्षक प्रा.डॉ. भास्करराव खांडगे यांच्या
सेवापूर्ती निमित्त सपत्नीक सत्कार करतांना
संस्थेचे विश्वस्त मा.डॉ.बी.जी.बंगाळ, प्रा.सौ. मंगला हांडे